जीवन का मार्ग

THE WAY OF LIFE

The Gospel according to John

Hindi—Common Language

1982
1,00,000 Copies

Printed at Salar Publication Ltd. Bangalore 560 005

सन्त यूहन्ना द्वारा लिखित शुभ-सन्देश

वचन मनुष्य बना

१ वचन संसार की सृष्टि के पहिले से था।
वचन परमेश्वर के साथ था
और वचन परमेश्वर था।
२ संसार की सृष्टि के पहले से ही वचन
परमेश्वर के साथ था।
३ उसके ही द्वारा सब वस्तुओं की सृष्टि हुई :
ऐसी कोई भी वस्तु नहीं है जिसकी सृष्टि उसके
द्वारा न हुई हो।
४ उसमें जीवन था और यह जीवन
मनुष्यों की ज्योति था।
५ ज्योति अन्धकार में चमकती रही है,
पर अन्धकार उस पर विजयी नहीं हुआ।

६ परमेश्वर ने एक मनुष्य को भेजा। उसका नाम यूहन्ना था। ७ यह मनुष्य गवाही देने आया था। यह ज्योति के विषय में गवाही देने आया था कि उसके द्वारा सब लोग विश्वास करें। ८ यूहन्ना स्वयं वह ज्योति नहीं था। पर वह इसलिए भेजा गया था कि वह ज्योति के विषय गवाही दे। ९ सच्ची ज्योति जो प्रत्येक मनुष्य को आलोकित करती है, संसार में आ रही थी।

१० वचन संसार में था। संसार की सृष्टि वचन के द्वारा हुई, फिर भी संसार ने उसे नहीं जाना। ११ वह अपनी सृष्टि में आया पर उसके अपनों ने उसे नहीं अपनाया। १२ जितनों ने उसे स्वीकार किया; जो व्यक्ति उसके नाम पर विश्वास करते हैं, उन्हें उसने परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार

अधिकार दिया। १३ वे परमेश्वर की सन्तान शारीरिक रीति से नहीं हुए, न को कामुकता के फलस्वरूप, न ही मनुष्य की योजना के अनुसार। परमेश्वर ने ही अपनी इच्छा से उन्हें अपनी सन्तान बनाया। १४ वचन मनुष्य बना और वह हमारे मध्य रहा। हमने उसकी महिमा देखी—अनुग्रह और सत्य से परिपूर्ण —ऐसी महिमा जैसी पिता के एकलौते पुत्र की होती है।

१५ बपतिस्मादाता यूहन्ना ने उसके विषय साक्षी दी है। उसने घोषणा की है—"यही वह व्यक्ति है जिनके विषय मैंने कहा था, जो मेरे बाद आ रहे हैं वह मुझसे महान् हैं, क्योंकि मेरे जन्म लेने के पहले से उनका अस्तित्व है।" १६ उसकी परिपूर्णता से हम सब को अनुग्रह पर अनुग्रह मिला। १७ मूसा के द्वारा हमें धर्म-नियम दिया गया पर यीशु ख्रिस्त के द्वारा अनुग्रह और सत्य मिला। १८ परमेश्वर को किसी मनुष्य ने कभी नहीं देखा है, केवल एकलौते पुत्र ने जो परमेश्वर है, वह पिता के सबसे नजदीक है। उसी ने परमेश्वर का ज्ञान कराया।

बपतिस्मादाता यूहन्ना की साक्षी

१९ यरूशलेम से यहूदियों ने पुरोहितों तथा उपपुरोहितों का एक दल भेजा कि वे यूहन्ना से पूछें कि "आप कौन हैं?" यूहन्ना ने यह साक्षी दी—२० उसने इन्कार नहीं किया, उसने मान लिया कि वह मसीह नहीं है। २१ तब उन्होंने उससे पूछा, "तो आप कौन हैं? क्या आप एलियाह हैं?" उसने कहा, "नहीं।" उन्होंने पूछा, "फिर क्या आप वह नबी है जिनकी प्रतीक्षा की जा रही है?" यूहन्ना ने उत्तर दिया, "नहीं।" २२ तब उन्होंने उससे पूछा "आप हैं कौन? भेजने वालों को हमें उत्तर देना है। आप अपने विषय में क्या कहते हैं?" २३ यूहन्ना ने कहा, "जैसा नबी यशायाह ने कहा, 'निर्जन प्रदेश में कोई पुकार रहा है—प्रभु का मार्ग सीधा बनाओ।' मैं वही हूं।" २४ जिन्हें फरीसी दल ने भेजा था, २५ उन्होंने उससे पूछा, "जब आप न तो मसीह हैं, न एलियाह हैं और न वह नबी हैं जो आने वाला है, तो फिर आप बपतिस्मा क्यों देते हैं?" २६ यूहन्ना ने उत्तर दिया, "मैं पानी

का बपतिस्मा देता हूं। तुम्हारे मध्य एक ऐसे व्यक्ति खड़े हैं जिन्हें तुम नहीं जानते। २७ वह इस संसार में मेरे बाद आए हैं। मैं उनकी जूतियां उतारने के भी योग्य नहीं हूं।" २८ ये घटनाएं यर्दन नदी के उस पार, बैथनियाह में हुईं, जहां यूहन्ना बपतिस्मा देता था।

परमेश्वर का मेमना

२९ दूसरे दिन यूहन्ना ने देखा कि यीशु उसके पास आ रहे हैं। यूहन्ना ने कहा, "वह देखो, परमेश्वर का मेमना! वह संसार का पाप हर लेता है। ३० यह वही हैं जिनके विषय मैंने कहा था, 'मेरे बाद एक व्यक्ति आ रहे हैं जो मुझसे महान हैं, क्योंकि मेरे जन्म लेने के पहले से उनका अस्तित्व है।' ३१ मैं उन्हें नहीं जानता था। पर मैं पानी का बपतिस्मा देने इसलिए आया कि वह इस्राएलियों में प्रकट किए जाएं।"

३२ यूहन्ना ने यह गवाही दी, "मैंने आत्मा को कबूतर के समान आकाश से उतरते देखा। आत्मा उनके ऊपर ठहर गया। ३३ मैं उन्हें नहीं जानता था। जिसने मुझे पानी का बपतिस्मा देने के लिए भेजा है उसने मुझसे कहा, 'जिस व्यक्ति पर आत्मा को उतरते और ठहरते देखो, वही व्यक्ति पवित्र आत्मा का बपतिस्मा देगा।' ३४ मैंने यह देखा है और गवाही दी है कि यह परमेश्वर-पुत्र हैं।"

यीशु के प्रथम शिष्य

३५ इस घटना के दूसरे दिन यूहन्ना अपने दो शिष्यों के साथ खड़ा था। ३६ उसने यीशु को जाते देखकर कहा, "वह देखो, परमेश्वर का मेमना।" ३७ उन दो शिष्यों ने यूहन्ना को यह कहते सुना। वे यीशु के

पीछे-पीछे जाने लगे। ३८ यीशु ने मुड़कर उन्हें पीछे-पीछे आते देखा। यीशु ने उनसे पूछा, "तुम क्या ढूंढ रहे हो ?" उन्होंने उनसे कहा, "रब्बी, आप कहां रहते हैं ? (रब्बी का अर्थ है गुरुजी) ३९ यीशु ने उसे कहा, "आओ तो तुम देख लोगे।" अतः वे दोनों उनके साथ गए और देखा कि वे कहां रहते थे। उस दिन वे यीशु के साथ ठहर गए क्योंकि चार बच चुके थे।

४० जो दो शिष्य बपतिस्मादाता यूहन्ना से सुनकर यीशु के पीछे-पीछे गए थे, उनमें से एक अन्द्रियास था। वह शमौन पतरस का भाई था। ४१ वह सबसे पहले अपने ही भाई शमौन से मिलने गया। उसने शमौन से कहा, "हमें मसीह मिल गया है।" (मसीह का अर्थ है अभिषिक्त[1]) ४२ अन्द्रियास उसे यीशु के पास ले गया। यीशु ने शमौन को देखकर कहा, "तू यूहन्ना का पुत्र है। तुझे कैफा कहा जाएगा।" (कैफा का अर्थ है चट्टान[2])

यीशु फिलिप्पुस तथा नथानिएल को बुलाते हैं

४३ इसके दूसरे दिन यीशु गलील प्रान्त जाना चाहते थे। उन्हें फिलिप्पुस मिला। यीशु ने उससे कहा, "आ मेरा शिष्य बन।" ४४ फिलिप्पुस भी अन्द्रियास और पतरस के गांव बैथसैदा का था। ४५ फिलिप्पुस, नथानिएल से मिला। उसने नथानिएल से कहा, "जिसके विषय मूसा ने धर्म-नियम में लिखा और नबियों ने अपनी पुस्तकों में लिखा है, वह हमें मिल गया है--यूसुफ का पुत्र, नासरत नगर का निवासी यीशु।" ४६ नथानिएल ने उससे कहा, "क्या नासरत से कोई अच्छी वस्तु निकल सकती है ? " फिलिप्पुस ने उससे कहा, "आओ और देख लो।" ४७ यीशु ने नथानिएल को अपनी ओर आते हुए देखकर उसके विषय में कहा, "देखो एक पक्का इस्राएली ! इसमें कुछ भी कपट नहीं।"

४८ नथानिएल ने उनसे कहा, "आप मुझे कब से जानते हैं ?" यीशु ने उसे उत्तर दिया, "फिलिप्पुस के तुझे बुलाने के पहले मैंने तुझे अंजीर के वृक्ष के नीचे देखा था। " ४९ नथानिएल ने उन्हें उत्तर दिया, "गुरुजी आप परमेश्वर के पुत्र हैं, आप इस्राएल के राजा हैं। " ५० यीशु ने उससे कहा, "क्या तू इसलिए विश्वास करता है कि मैंने तुझसे यह कहा 'मैंने तुझे अंजीर

[1]मूल में ख्रिस्त [2]मूल में पतरस

के वृक्ष के नीचे देखा था ?' तू इससे भी महान कार्य देखेगा !" ५१ यीशु ने उससे कहा, "मैं सच कहता हूं कि तुम लोग स्वर्ग को खुला हुआ देखोगे और परमेश्वर के दूतों को मानव-पुत्र के माध्यम से चढ़ते-उतरते देखोगे।"

काना में एक विवाह

२ इस घटना में के बाद तीसरे दिन की बात है। गलील प्रान्त के काना शहर में किसी का विवाह था। यीशु की मां वहां थी। २ यीशु और उनके शिष्य भी विवाह में निमन्त्रित थ। ३ विवाह भोज में दाखरस समाप्त

हो गया। यीशु की मां ने यीशु से कहा, "उनके पास दाखरस नहीं है।" ४ यीशु ने उससे कहा, "मां, मेरे कार्य से तुझे क्या मतलब ? अभी मेरा समय नहीं आया है।" ५ उनकी मां ने सेवकों से कहा, "जो कुछ वह तुमसे कहे वह करो।" ६ यहूदियों मे शुद्धिकरण की प्रथा थी। इसके लिए बड़े-बड़े घड़ों में पानी रखा जाता था। वहां पत्थर के छः घड़े रखे थे। प्रत्येक में सौ सवा सौ लीटर पानी समाता था। ७ यीशु ने सेवकों से कहा, "इन घड़ों में पानी

भर दो।" उन्होंने घड़ों को मुंह तक भर दिया। ८ तब यीशु ने उनसे कहा, "अब इनमें से थोड़ा निकालकर भोज के प्रवन्धक के पास ले जाओ।" उन्होंने ऐसा ही किया। ९ भोज के प्रवन्धक ने वह पानी चखा तो दाखरस बन गया था। उसे यह नहीं मालूम था कि दाखरस कहां से आया। पर पानी, लाने वाले सेवक यह जानते थे। प्रवन्धक ने दूल्हे को बुलाया १० और उससे कहा, "प्रत्येक मनुष्य पहले उत्तम दाखरस देता है। जब अतिथि पीकर तृप्त हो जाते हैं तब वह साधारण दाखरस देता है। पर तुमने अच्छा दाखरस अब तक छिपा रखा था।"

११ यीशु ने गलील के काना शहर में अपना यह पहला अद्‌भुत् चिन्हं दिखाया और अपनी महिमा प्रकट की। उनके शिष्यों ने उन पर विश्वास किया।

१२ इसके बाद यीशु, उनकी माता, उनके भाई तथा शिष्य कफरनहूम गए। वे वहां ज्यादा दिन नहीं रुके।

मंदिर का शुद्धिकरण

१३ यहूदियों का फसह—त्योहार निकट था। यीशु यरुशलेम गए। १४ उन्होंने मंदिर में बैलों, भेड़ों और कबूतरों का व्यापार करने वालों को पाया, तथा मुद्रा विनिमय करने वालों को बैठे देखा। १५ यीशु ने रस्सियों से एक कोड़ा बनाया। उन्होंने भेड़-बैल, सब को मंदिर से बाहर निकाल दिया। उन्होने मुद्रा–विनिमय करने वालों के सिक्के बिखेर दिए तथा उन के
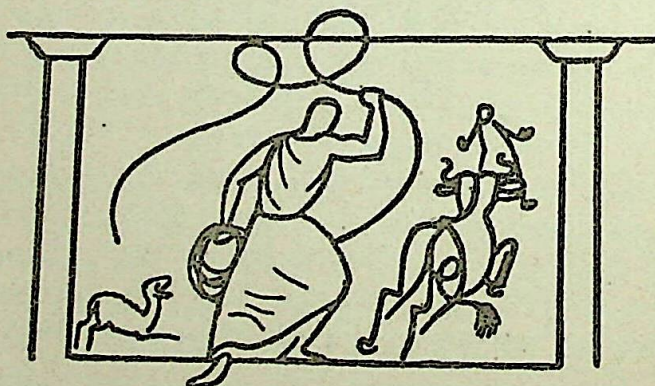
पीढ़े उलट दिए। १६ उन्होंने कबूतर बेचने वालों को आज्ञा दी, "इन्हें यहां से बाहर ले जाओ। मेरे पिता के भवन को बाजार मत बनाओ।" १७ यीशु के शिष्यों को स्मरण आया कि शास्त्र में लिखा है—'तेरे भवन के प्रति मेरा उत्साह, अग्नि की तरह मुझे जला रहा है।' १८ यहूदियों ने उनसे पूछा, "तू हमें कौन सा अद्भुत चिन्ह दिखाएगा कि तुझे यह करने का अधिकार है ?" १९ यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "इस मंदिर को गिरा दो और मैं इसे तीन दिन में उठा दूंगा।" २० इस पर यहूदियों ने कहा, "इस मंदिर को बनाने में छियालीस वर्ष लगे और तू इसे तीन दिन में उठा देगा ?" २१ पर यीशु ने अपने शरीर के मंदिर के विषय कहा था। २२ अतः जब यीशु मृतकों में से फिर जीवित हुए तब उनके शिष्यों को स्मरण आया कि उन्होंने यह कहा था। उन्होंने शास्त्र के वचन तथा यीशु द्वारा कहे शब्दों का विश्वास किया।

यीशु सब मनुष्यों को जानते हैं

२३ फसह-त्योहार के समय यीशु यरूशलेम में थे। लोगों ने उनके द्वारा किए गए अद्भुत चिन्हों को देखा। बहुतों ने उनके नाम पर विश्वास किया। २४ पर यीशु ने अपने आपको उनके भरोसे पर नहीं छोड़ा क्योंकि वह सब मनुष्यों को जानते थे। २५ उन्हें आवश्यकता नहीं थी कि कोई व्यक्ति उन्हें मनुष्यों के विषय बताए। वह जानते थे कि मनुष्यों के हृदय में क्या है।

यीशु और निकोदेमुस

३ निकोदेमुस एक फरीसी था। वह यहूदियों का एक अधिकारी था। २ एक बार वह रात के समय यीशु से मिलने आया और उनसे कहने लगा, "गुरूजी, हम जानते हैं कि आप परमेश्वर की ओर से भेजे गए शिक्षक हैं। जो अद्भुत चिन्ह आप दिखाते हैं उन्हें कोई अन्य व्यक्ति नहीं दिखा सकता जब तक परमेश्वर उसके साथ न हो।" ३ यीशु ने उसे उत्तर दिया,

"मैं तुझसे सच कहता हूं, यदि किसी व्यक्ति का नया[1] जन्म न हो तो वह परमेश्वर का राज्य नहीं देख सकता।" ४ निकोदेमुस ने उनसे कहा, "एक बूढ़ा मनुष्य कैसे जन्म ले सकता है? क्या वह अपनी मां की कोख में प्रवेश करके दुबारा जन्म ले सकता है?" ५ यीशु ने उत्तर दिया, "मैं तुझसे सच कहता हूं जब तक कोई व्यक्ति पानी और आत्मा से जन्म न ले, वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। ६ जो मनुष्य से उत्पन्न हुआ है, वह मनुष्य मात्र है। जो आत्मा से उत्पन्न हुआ वह आत्मा है। ७ आश्चर्य मत कर कि मैंने तुझसे कहा कि तुझे नया[1] जन्म लेना आवश्यक है। ८ हवा[2] जहां चाहती है वहां बहती है। तुम केवल उसकी आवाज सुनते हो। पर तुम नहीं जानते कि वह कहां से आ रही है और किधर जा रही है। इसी प्रकार आत्मा से जन्म लेने वाला हर एक व्यक्ति होता है।" ९ निकोदेमुस ने पूछा, "यह कैसे हो सकता है?" १० यीशु ने उससे कहा, "तू इस्राएलियों का शिक्षक है फिर भी तू ये बातें नहीं जानता? ११ मैं तुझसे सच कहता हूं कि हम जो जानते हैं वह कहते हैं। हमने जो देखा है उसकी गवाही देते हैं। पर तुम लोग हमारी गवाही स्वीकार नहीं करते। १२ मैंने तुम्हें सांसारिक बातें बताईं पर तुम विश्वास नहीं करते। अब यदि मैं तुम्हें स्वर्गीय बातों के विषय बताऊं तो तुम कैसे विश्वास करोगे? १३ कोई व्यक्ति स्वर्ग पर नहीं चढ़ा। सिर्फ एक, वही जो स्वर्ग से नीचे उतरा था, अर्थात् मानव-पुत्र। १४ जिस प्रकार निर्जन प्रदेश में मूसा ने सांप को ऊपर उठाया था उसी प्रकार मानव-पुत्र का भी उठाया जाना आवश्यक है १५ ताकि प्रत्येक विश्वास करने वाला उसके द्वारा अनन्त जीवन प्राप्त करे।

१६ "परमेश्वर ने संसार से बहुत अधिक प्रेम किया। यहां तक कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो पर अनन्त-जीवन प्राप्त करे। १७ परमेश्वर ने पुत्र को संसार में इसलिए नहीं भेजा कि वह संसार को दोषी ठहराए। उसने पुत्र को इसलिए भेजा कि संसार उसके द्वारा उद्धार पाए।

---

[1]अथवा ऊपर से [2]यूनानी में हवा और आत्मा के लिए एक ही शब्द है।

१८ "जो व्यक्ति उस पर विश्वास करता है उसे दोषी नहीं ठहराया जाएगा। जो व्यक्ति उस पर विश्वास नहीं करता उसका न्याय तो हो चुका क्योंकि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र पर विश्वास नहीं किया। १९ न्याय का आधार यह है--ज्योति संसार में आई है परंतु मनुष्यों ने ज्योति की अपेक्षा अंधकार से अधिक प्रेम किया क्योंकि वे बुरे कार्य करते हैं। २० भ्रष्टाचार करने वाला प्रत्येक व्यक्ति ज्योति से घृणा करता है। वह ज्योति से दूर भागता है ताकि उसके कामों का भण्डा फोड़ न हो जाए। २१ पर जो सत्य को अपनाता है वह ज्योति में आता है ताकि यह प्रकट हो कि उसके कार्य परमेश्वर की आज्ञानसार किए गए हैं।"

यीशु और बपतिस्मादाता यूहन्ना

२२ इसके बाद यीशु अपने शिष्यों के साथ यहूदिया प्रांत में आए। वह उनके साथ वहां रहे और बपतिस्मा देते थे। २३ यूहन्ना भी सालीम गांव के निकट आइनोन झरने में बपतिस्मा देता था क्योंकि वहां पानी अधिक था। लोग वहां आकर बपतिस्मा लेते थे। २४ उस समय तक बपतिस्मादाता यूहन्ना को जेल में नहीं डाला गया था।

२५ यूहन्ना के शिष्यों तथा कुछ यहूदियों में शुद्धिकरण के विषय को लेकर वादविवाद हुआ। २६ वे यूहन्ना के पास आए। उन्होंने उससे कहा, "गुरुजी, जो व्यक्ति यर्दन के उस पार आपके साथ थे, और जिनके विषय आपने गवाही दी थी वह बपतिस्मा दे रहे हैं और सब लोग उनके पास जाते हैं।" २७ यूहन्ना ने उत्तर दिया, "यदि परमेश्वर किसी व्यक्ति को न दे तो मनुष्य कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकता। २८ तुम स्वयं मेरे विषय गवाही देते हो कि मैंने कहा था, 'मैं मसीह नहीं हूं। पर मैं वह हूं जो मसीह के पहले भेजा गया।' जिसकी दुल्हन है वह दूल्हा है। २९ दूल्हे का मित्र उसके पास खड़ा होकर उसकी बातें सुनता है। वह दूल्हे की आवाज सुनकर खुश होता है। अतः मेरी यह

खुशी पूरी हो गई है। ३० यह उचित है कि वह अधिक महान हों और मैं कम।"

स्वर्ग से आने वाला व्यक्ति

३१ जो ऊपर से आया है वह सबसे श्रेष्ठ है। जो पृथ्वी का है वह सांसारिक है और संसार की ही बातें करता है। जो स्वर्ग से आया है वह सबसे श्रेष्ठ है। ३२ उसने जो देखा और सुना है उसी की गवाही देता है। पर उसकी गवाही कोई स्वीकार नहीं करता। ३३ जो व्यक्ति उसकी गवाही स्वीकार करता है वह यह प्रमाणित करता है कि परमेश्वर सच्चा है। ३४ परमेश्वर ने जिसे भेजा है वह परमेश्वर के शब्द बोलता है क्योंकि परमेश्वर उसे नाप-नाप कर आत्मा नहीं देता। ३५ पिता, पुत्र से प्रेम करता है। उसने सब कुछ पुत्र के हाथ में सौंप दिया है। ३६ जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है। पर पुत्र की आज्ञा न माननेवाला व्यक्ति जीवन नहीं देखेगा। परमेश्वर का क्रोध उस पर बना रहेगा।

यीशु और एक सामरी स्त्री

४ फरीसियों ने यह सुना था कि यीशु यूहन्ना से अधिक शिष्य बनाते हैं और बपतिस्मा देते हैं। २ यीशु स्वयं बपतिस्मा नहीं देते थे परन्तु उनके शिष्य बपतिस्मा देते थे। ३ जब यीशु को इस बात का पता चला तो वह यहूदिया प्रांत छोड़कर फिर गलील प्रांत गए। ४ उन्हें सामरिया प्रांत से होकर जाना था।

५ वे सामरिया प्रांत के सुखार नामक शहर में आए। यह उस भूमि के पास बसा है जिसे याकूब ने अपने पुत्र, यूसुफ को दिया था। ६ वहीं पर याकूब का कुंआ था। यीशु यात्रा के कारण थक गए थे। अतः वह याकूब के कुंए पर बैठ गए। वह दोपहर का समय था। ७ एक सामरी स्त्री पानी भरने आई। यीशु ने उससे कहा—"मुझे पानी मिला दे," ८ क्योंकि उनके
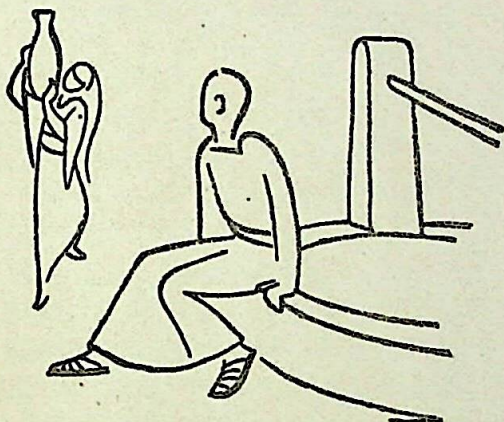
शिष्य भोजन खरीदने के लिये शहर गए थे। ९ उस सामरी स्त्री ने उनसे कहा, "आप यहूदी हैं फिर भी एक सामरी स्त्री से पीने का पानी मांगते हैं ?" (यहूदी, सामरियों के हाथ का पानी नहीं पीते थे।) १० यीशु ने उसे उत्तर दिया, "यदि तू परमेश्वर के उपहार को जानती और उसे जानती जो तुझसे कह रहा है कि मुझे पानी पिला तो तू उससे मांगती और वह तुझे जीवन का जल देता।" ११ स्त्री ने उनसे कहा, "महाशय, आपके पास बाल्टी भी नहीं है और कुंआ भी गहरा है। तब आपको जीवन का जल कहां से मिला ? १२ क्या आप हमारे पूर्वज याकूब से भी महान हैं जिन्होंने हमें यह कुंआ दिया ? उन्होंने खुद इस कुंए का पानी पिया तथा उनके पुत्रों ने और उनके मवेशियों ने भी।" १३ यीशु ने उसे उत्तर दिया, "जो व्यक्ति यह पानी पिएगा उसे फिर प्यास लगेगी। १४ जो पानी मैं दूंगा, उसे यदि कोई व्यक्ति पिए तो उसे फिर कभी प्यास नहीं लगेगी। जो पानी मैं उसे दूंगा वह उसमें एक ऐसा स्रोत बनेगा जो निरन्तर बहता रहेगा और उसे अनन्त जीवन देगा।" १५ स्त्री ने उनसे कहा, "महाशय मुझे यह पानी दीजिए ताकि न तो मुझे प्यास लगे और न मैं पानी भरने यहां आऊं।"

१६ यीशु ने उससे कहा, "जा अपने पति को यहां बुला ला।" १७ स्त्री ने उत्तर दिया, "मेरा कोई पति नहीं है।" यीशु ने उससे कहा, "तू ने ठीक ही

कहा है कि मेरा कोई पति नहीं, १८ क्योंकि तेरे पांच पति हो चुके हैं और जिसके साथ तू अब रहती है वह तेरा पति नहीं है। तू ने यह सच ही कहा है।" १९ स्त्री ने उनसे कहा, "महाशय, मुझे मालूम होता है कि आप एक नबी हैं। २० हमारे पूर्वजों ने इस पर्वत पर परमेश्वर की उपासना की। आप यहूदी लोग कहते हैं कि यरूशलेम वह जगह है जहां उपासना करनी चाहिये।" २१ यीशु ने उससे कहा, "हे स्त्री, मेरी बात का विश्वास कर। वह समय आ रहा है जब न तो इस पर्वत पर और न यरूशलेम में तुम पिता की उपासना करोगे। २२ तुम उसकी उपासना करते हो जिसे तुम नहीं जानते। हम उसकी उपासना करते हैं जिसे जानते हैं क्योंकि उद्धार यहूदियों में से है। २३ समय आ रहा है, अब भी है जब परमेश्वर के सच्चे उपासक आत्मा में और सत्य में पिता की उपासना करेंगे क्योंकि पिता ऐसे ही उपासकों की खोज में है। २४ परमेश्वर आत्मा है अतः यह आवश्यक है कि उसकी उपासना करने वाले आत्मा में और सत्य में उपासना करें।" २५ स्त्री ने उनसे कहा, "मैं जानती हूं कि मसीह जिसे ख्रिस्त भी कहते हैं आने वाला है। जब वह आएगा तब वह हमें सब बातें बताएगा।" २६ यीशु ने उससे कहा, "जिसके विषय तू कह रही है, वह मैं हूं।"

२७ इस समय यीशु के शिष्य वापस आ गए। उन्हें आश्चर्य हुआ कि यीशु एक स्त्री से बातचीत कर रहे हैं। पर किसी ने यह नहीं पूछा "आप को क्या चाहिए या आप उससे क्यों बातें कर रहे हैं?" २८ उस स्त्री ने अपना घड़ा वहीं छोड़ दिया। वह शहर लौट गई। उसने लोगों से कहा, २९ "आओ और उस व्यक्ति को देखो जिसने मुझे वे सब बातें बता दीं जो मैंने की थीं। कहीं यही तो मसीह नहीं है?" ३० वे सब शहर से निकल कर यीशु से मिलने चले।

३१ इस बीच शिष्यों ने यीशु से कहा, "गुरूजी, कुछ खा लीजिये।" ३२ यीशु ने कहा, "मेरे पास जो भोजन है उसे तुम नहीं जानते।" ३३ शिष्यों ने आपस में कहा, "क्या किसी ने उन्हें भोजन दिया है?" ३४ यीशु ने उनसे कहा, "मेरा भोजन यह है कि मैं उसकी इच्छा पूरी करूं जिसने मुझे भेजा है तथा उसके कार्य को पूरा करूं। ३५ क्या तुम यह नहीं कहते—चार महीने और हैं फिर फसल काटने का समय आएगा? मैं तुमसे कहता हूं, देखो, अपनी आंख उठाकर खेतों को देखो, फसल तैयार है, काटने का समय आ गया है।

३६ काटने वाले को मजदूरी मिलती है। वह अनन्त-जीवन के लिए फल एकत्र करता है ताकि बीज बोने वाला तथा फसल काटने वाला दोनों एक साथ आनंद कर सकें। ३७ इस तरह यह कहावत सही उतरती है कि बीज बोने वाला कोई और है, फसल काटने वाला कोई और। ३८ मैंने तुम्हें वह फसल काटने भेजा है जिसके लिये तुमने परिश्रम नहीं किया। तुमने दूसरों के परिश्रम का लाभ उठाया है।"

३९ सामरिया प्रान्त के उस शहर के बहुत से लोगों ने यीशु पर विश्वास किया क्योंकि उस स्त्री ने यह गवाही दी थी कि उसने वे सब बातें बता दीं जो मैंने की थीं। ४० जब सामरी लोग यीशु के पास आए तो उन्होंने यीशु से विनती की कि वह उनके साथ ठहरें। यीशु उनके शहर में दो दिन तक रुके। ४१ और भी बहुतों ने उनके सन्देश के कारण विश्वास किया। ४२ उन्होंने उस स्त्री से कहा, "अब हम तेरी बातों के ही कारण विश्वास नहीं करते। स्वयं हमने उनका सन्देश सुन लिया है। हम जानते हैं कि निश्चय ये ही संसार के उद्धारकर्ता हैं।"

यीशु एक अधिकारी के पुत्र को स्वस्थ करते हैं

४३ दो दिन पश्चात् यीशु वहां से गलील प्रांत गए। ४४ यीशु ने स्वयं यह साक्षी दी थी कि एक नबी का आदर उसकी मातृभूमि में नहीं होता। ४५ जब यीशु गलील पहुंचे तो गलील निवासियों ने उनका स्वागत किया। वे भी त्योहार के लिये यरूशलेम गए थे। उन्होंने वह सब देखा था जो यीशु ने त्योहार के समय यरूशलेम में किया था।

४६ यीशु फिर गलील के काना शहर में आए। यहां उन्होंने पानी को दाखरस में बदल दिया था। वहाँ एक सरकारी अधिकारी था। उसका पुत्र कफरनहूम में बीमार था। ४७ उस अधिकारी ने सुना कि यीशु यहूदिया प्रांत से लौट कर गलील प्रांत में आ गए हैं। अतः वह यीशु के पास आया। वह उनसे विनती करने लगा कि वह कफरनहूम चलें और उसके पुत्र को स्वस्थ करें। उसका पुत्र मरने पर था। ४८ यीशु ने उससे कहा, "जब तक तुम अद्भुत चिन्ह और आश्चर्य-कर्म न देख लो तुम विश्वास नहीं करते।" ४९ अधिकारी ने उनसे कहा, "प्रभु मेरे बच्चे के मरने से पहले चलिए।" ५० यीशु ने उससे कहा, "जा तेरा पुत्र जीवित है।" उस अधिकारी ने यीशु

के कहे शब्दों का विश्वास किया और वह लौट गया। ५१ वह अभी मार्ग पर ही था कि उसके दास उससे मिले। उन्होंने कहा कि आप का पुत्र जीवित है। ५२ उसने उनसे उस समय के विषय पूछा जब उसके पुत्र की हालत में सुधार हुआ। उन्होंने कहा, "कल दोपहर के एक बजे उसका बुखार उतर गया।" ५३ उसके पिता ने जान लिया कि यह वही समय था जब यीशु ने उससे कहा था, 'तेरा पुत्र जीवित है।' अतः उसने तथा उसके पूरे परिवार ने विश्वास किया। ५४ यहूदिया प्रांत से गलील आने के बाद यीशु ने यह दूसरा अद्भुत चिन्ह दिखाया।

यीशु कुण्ड पर एक मनुष्य को स्वस्थ करते हैं

५ इन घटनाओं के बाद यहूदियों का एक त्योहार आया। यीशु यरूशलेम गए। २ यरूशलेम में भेड़-फाटक के पास एक कुण्ड है। इब्रानी भाषा में उसे बेथसाथा कहते हैं। इसमें पांच बरामदे हैं। ३ इन बरामदों में बहुत से बीमार पड़े रहते थे, अन्धे, लंगड़े तथा लकवा मारे रोगी। ये पानी के हिलने की प्रतीक्षा करते थे ४ क्योंकि समय-समय पर प्रभु का एक दूत कुण्ड में उतरता था और पानी हिलाता था। पानी हिलाए जाने के बाद जो व्यक्ति पहले पानी में उतरता था उसकी बीमारी दूर हो जाती थी, चाहे उसे कोई भी बीमारी क्यों न हो। ५ वहां एक मनुष्य था। उसे अड़तीस वर्षों से एक बीमारी थी। ६ यीशु ने उस मनुष्य को लेटे हुए देखा। उन्होंने यह जानकर कि वह बहुत दिनों से इस दशा में है उससे पूछा "क्या तू स्वस्थ होना चाहता है?" ७ उस रोगी ने उन्हें उत्तर दिया "महाशय मेरे पास कोई नहीं है जो मुझे उस समय कुण्ड में उतारे जब पानी हिलाया जाता है। इससे पहले कि मैं वहां पहुंच सकूं कोई और कुण्ड में उतर जाता है।" ८ यीशु ने उससे कहा, "उठ, अपना बिस्तर उठा और चल।" ९ उसी समय वह मनुष्य स्वस्थ हो गया। वह अपना बिस्तर उठाकर चलने लगा।

वह विश्राम-दिवस था। १० अतः उस मनुष्य से जो स्वस्थ हुआ था, यहूदियों ने कहा, "आज विश्राम-दिवस है। धर्म-नियम के अनुसार आज के दिन तुम्हें अपना बिस्तर नहीं ले जाना चाहिए।" ११ उसने उन्हें उत्तर दिया, "जिसने मुझे स्वस्थ किया उसी ने मुझसे कहा, 'अपना बिस्तर उठा और

चल।'" १२ उन्होंने उससे पूछा, "वह कौन व्यक्ति है जिसने तुझसे कहा, 'उठा और चल ?'" १३ जो मनुष्य स्वस्थ हुआ था वह नहीं जानता था कि वह व्यक्ति कौन था। उस स्थान पर भीड़ थी और यीशु वहां से चले गए थे।

१४ इस घटना के बाद मंदिर में उस मनुष्य से यीशु की भेंट हुई। यीशु ने उससे कहा, "देख, तू स्वस्थ हो गया है। फिर पाप न करना ताकि इससे बड़ा कष्ट तुझ पर न आए।" १५ वह मनुष्य यहूदियों के पास गया। उसने उन्हें बताया कि यीशु ने उसे स्वस्थ किया था। १६ अतः यहूदी यीशु को सताने लगे क्योंकि वह ऐसे काम विश्राम-दिवस पर करते थे। १७ पर यीशु ने उनसे कहा, "मेरे पिता जी अब तक कार्य करते हैं और मैं भी कार्य करता हूं।" १८ इसके कारण उनकी हत्या करने के लिये यहूदियों की इच्छा और तीव्र हो गई। उनका कहना था—यीशु ने न केवल विश्राम-दिवस का नियम तोड़ा पर परमेश्वर को अपना पिता भी कहा, इस तरह अपने आपको परमेश्वर के बराबर बनाया।

पुत्र का अधिकार

१९ यीशु ने उत्तर दिया, "मैं तुमसे सच कहता हूं कि पुत्र अपने आपसे कुछ नहीं कर सकता है। वह वे कार्य करता है जो वह पिता को करते देखता है क्योंकि जो कार्य पिता करता है वही कार्य पुत्र भी उसी तरह करता है। २० पिता पुत्र को प्यार करता है। वह जो कार्य करता है वे सब पुत्र को दिखाता है। वह पुत्र को इससे भी महान कार्य दिखाएगा कि तुम आश्चर्य चकित रह जाओ। २१ जैसे पिता मृतकों को फिर जीवित करता है वैसे ही पुत्र भी जिसे चाहता है उसे जीवन देता है। २२ पिता किसी का न्याय नहीं करता। उसने न्याय का सारा कार्य पुत्र को दे दिया है २३ ताकि सब मनुष्य पुत्र का भी आदर करें जैसा वे पिता का आदर करते हैं। जो व्यक्ति पुत्र पर आदर नहीं करता वह पिता का भी आदर नहीं करता, जिसने पुत्र को भेजा है। २४ मैं तुमसे सच कहता हूं कि जो व्यक्ति मेरा सन्देश सुनकर मेरे भेजने वाले पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है। उसे दण्ड नहीं दिया जाएगा। वह मृत्यु मे निकल कर जीवन में प्रवेश कर चुका है।

२५ मैं तुमसे सच कहता हूं कि वह समय आ रहा है और अब भी है जब मृत परमेश्वर के पुत्र की आवाज सुनेंगे। उसकी आवाज सुनने वाले जीवित रहेंगे। २६ जैसे पिता में जीवन का स्रोत है वैसे ही पुत्र में भी जीवन का स्रोत है। पिता ने यह जीवन का स्रोत पुत्र को दिया है। २७ उसने पुत्र को न्याय करने का अधिकार दिया क्योंकि वह मानव-पुत्र है। २८ आश्चर्य न करो कि मैंने कहा वह समय आ रहा है जब कबर में गाड़े गए मुर्दे पुत्र की आवाज सुनेंगे। २९ वे कबर से निकल आएंगे। जिन्होंने अच्छे कार्य किए हैं वे फिर जीवित किए जाएंगे और अनन्त जीवन के भागी होंगे। जिन्होंने बुरे कार्य किए हैं वे फिर जीवित किए जाएंगे और उन्हें दण्ड दिया जाएगा।"

यीशु की गवाही देने वाले

३० "मैं अपने आप कुछ नहीं कर सकता। जो मैं सुनता हूं उसके अनुसार न्याय करता हूं। मेरा फैसला न्यायपूर्ण है क्योंकि मैं अपनी इच्छा पूरी करना नहीं चाहता। मैं उसकी इच्छा पूरी करता हूं जिसने मुझे भेजा है। ३१ यदि मैं अपने विषय गवाही दूं तो मेरी गवाही सच्ची नहीं। ३२ मेरे विषय कोई अन्य व्यक्ति गवाही देता है। मैं जानता हूं कि जो गवाही मेरे विषय वह देता है वही सच्ची है। ३३ तुमने बपतिस्मादाता यूहन्ना के पास अपने दूत भेजे थे। उसने सत्य की गवाही दी। ३४ मुझे मनुष्य की गवाही की आवश्यकता नहीं। मैंने ये बातें इसलिए कहीं कि तुम्हें उद्धार मिले। ३५ वह मनुष्य एक दिए के समान जल और चमक रहा था। कुछ समय तक तुम उसकी ज्योति में आनन्द मनाना चाहते थे। ३६ पर यूहन्ना द्वारा दी गई गवाही से भी महान गवाही मेरे पास है। पिता ने मुझे कुछ कार्य पूरा करने के लिये भेजा है। जो कार्य मैं करता हूं वे ही मेरे विषय गवाही देते हैं कि पिता ने मुझे भेजा है। ३७ स्वयं पिता ने भी, जिसने मुझे भेजा है, मेरे विषय गवाही दी है। तुमने न कभी उसकी आवाज सुनी और न ही उसका दर्शन किया है। ३८ उसका सन्देश तुम पर असर नहीं करता क्योंकि जिसे उसने भेजा है उस पर तुम विश्वास नहीं करते। ३९ तुम यह समझ कर शास्त्र में खोजते हो कि वहां तुम्हें अनन्त-जीवन मिलेगा। शास्त्र भी मेरे विषय गवाही देते हैं। ४० पर जीवन प्राप्त करने के लिये तुम मेरे पास आना नहीं चाहते।

४१ "मैं मनुष्यों की प्रशंसा नहीं चाहता। ४२ मैं यह जानता हूं कि तुममें परमेश्वर का प्रेम नहीं है। ४३ मैं अपने पिता का अधिकार लेकर आया पर तुमने मुझे ग्रहण नहीं किया। यदि कोई दूसरा अपने ही अधिकार से आए तो तुम उसे ग्रहण करोगे। ४४ एक ही परमेश्वर है। तुम उस परमेश्वर से प्रशंसा प्राप्त करने की कोशिश नहीं करते पर एक दूसरे की प्रशंसा ग्रहण करते हो तुम कैसे विश्वास कर सकते हो? ४५ यह न सोचो कि मैं पिता के सामने तुम पर दोष लगाऊंगा। तुम पर दोष लगाने वाला तो मूसा है जिस पर तुमने आशा रखी है। ४६ यदि तुमने मूसा का विश्वास किया होता तो तुम मेरा भी विश्वास करते क्योंकि मूसा ने मेरे विषय लिखा है। ४७ मूसा ने जो लिखा है, उस पर जब तुम विश्वास नहीं करते तो मेरे सन्देश पर क्यों विश्वास करोगे।"

पांच हजार लोगों के लिये भोजन

६ इसके बाद यीशु गलील (तिबेरियास) झील के उस पार गए। २ यीशु ने बीमारों को स्वस्थ किया था। लोगों ने ये अद्भुत चिन्ह देखे थे इसलिये बड़ी भीड़ उनके पीछे चल पड़ी। ३ यीशु एक पहाड़ पर गए। वहां वे अपने शिष्यों के साथ बैठ गए। ४ यहूदियों का फसह-त्योहार नज़दीक था। ५ यीशु ने अपनी आंखें उठाकर देखा कि एक बड़ी भीड़ उनके पास आ रही है। उन्होंने फिलिप्पुस से पूछा, "इनके भोजन के लिए हम कहां से रोटियां खरीदें?" ६ उन्होंने फिलिप्पुस को परखने के लिये यह पूछा था। यीशु जानते थे कि वह क्या करने वाले हैं। ७ फिलिप्पुस ने उत्तर दिया, "यदि हम दो सौ रुपयों की भी रोटियाँ लें तो पूरी नहीं होंगी कि प्रत्येक को एक टुकड़ा भी मिले।" ८ उनके शिष्यों में से एक, शमौन पतरस के भाई, अन्द्रियास ने उनसे कहा, ९ "यहाँ एक बालक के पास जौ की पांच रोटियां तथा दो मछलियां हैं। पर इनसे इतने लोगों के लिये क्या होगा!" १० यीशु ने कहा, "लोगों को भोजन के लिये बैठाओ।" उस स्थान पर काफी घास थी। लोग भोजन के लिये बैठ गए। वहां लगभग पांच हजार पुरुष थे। ११ यीशु ने रोटियां लीं, परमेश्वर को धन्यवाद दिया और बैठे लोगों में बांट
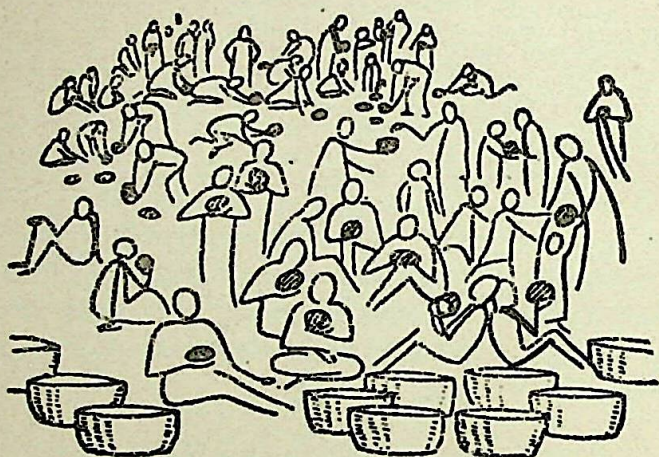
दी । उसी तरह उन्होंने मछलियां भी बांट दीं । लोगों ने जी भर कर खाया । १२ जब लोग खाकर-तृप्त हो गए तब यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "बचे हुए टुकड़ों को एकत्र करो ताकि कुछ भी व्यर्थ न जाए ।" १३ अतः उन्होंने रोटी के टुकडे एकत्र किए । उन्होंने जौ की उन पांच रोटियों के बचे टुकड़ो से बारह टोकरियां भरी । ये टुकडे लोगों के खाने के बाद बचे थे ।

१४ यीशु द्वारा किए गए इस अद्भुत चिन्ह को देखकर लोग कहने लगे, "निश्चय यही वह नबी है जो संसार में आनेवाला था ।" १५ यीशु ने यह जान लिया कि लोग आकर उन्हें जबरदस्ती राजा बनाना चाहते है। वह फिर पहाड पर अकेले चले गए ।

यीशु पानी पर चलते है

१६ जब शाम हुई तो यीशु के शिष्य झील पर गए । १७ वे एक नाव में बैठकर झील के उस पार कफरनहूम की ओर चले । अंधेरा हो गया था । यीशु अभी तक उनके साथ नहीं आए थे । १८ भयंकर आंधी चलने लगी । झील में लहरें उठ रही थीं । १९ जब शिष्य नाव को चार या पांच किलो-

मीटर खे चुके तब उन्होंने यीशु को देखा। वह पानी पर चलते हुए नाव के नजदीक आ रहे थे। शिष्य डरने लगे। २० यीशु ने उनसे कहा, "मैं हूं, मत डरो।" २१ वे यीशु को नाव पर लेना चाहते थे। पर उसी समय नाव उस तट पर जा लगी जहां वे आ रहे थे।

लोग यीशु की खोज में

२२ जो लोग झील की दूसरी ओर खड़े थे उन्होंने देखा था कि वहां सिर्फ एक ही नाव खडी थी। वे जानते थे कि यीशु अपने शिष्यों के साथ नाव पर नहीं गए थे। सिर्फ उनके शिष्य गए थे। २३ दूसरे दिन तिबेरियास से अन्य नावें उस स्थान पर आईं। यह वही स्थान था जहां प्रभु ने परमेश्वर को धन्यवाद दिया था और लोगों ने रोटियां खाई थीं। २४ भीड़ ने जब देखा कि यीशु वहां नहीं हैं और न ही उनके शिष्य तब वे नावों पर चढ गए। वे यीशु को ढूढ़ते-ढूढ़ते कफरनहूम आए।

यीशु जीवन की रोटी

२५ उन्होंने यीशु को झील के उस पार पाया। उन्होंने पूछा, "गुरूजी, आप यहां कब आए?" २६ यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "मैं तुमसे सच कहता हू तुम मुझे इसलिए नहीं ढूंढ़ते हो क्योंकि तुमने अद्भुत चिन्ह देखे हैं। पर तुम मुझे इसलिए ढूढ़ रहे हो क्योंकि तुमने रोटियां खाईं और तृप्त हुए। २७ जो भोजन नष्ट हो जाएगा उसके लिए मेहनत मत करो। पर उस भोजन के लिए मेहनत करो जो अनन्त जीवन तक रहेगा। यह भोजन मानव-पुत्र तुम्हें देगा क्योंकि परमेश्वर पिता ने उस पर अपनी छाप लगाई है।" २८ उन्होंने यीशु से पूछा, "परमेश्वर के कार्य करने के लिये हम क्या करें?" २९ यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "जो कार्य परमेश्वर तुमसे चाहता है वह यह है कि तुम उस व्यक्ति पर विश्वास करो जिसे उसने भेजा है।" ३० इस पर उन्होंने कहा, "आप कौन सा अद्भुत चिन्ह दिखाते हैं कि हम उसे देखकर आपका विश्वास करें? ३१ हमारे पूर्वजों ने निर्जन प्रदेश में मन्ना खाया। जैसा शास्त्र में लिखा है—उसने खाने के लिये उन्हें स्वर्ग से रोटी दी।"

३२ इस पर यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुमसे सच कहता हूं कि मूसा ने तुम्हें स्वर्ग से रोटी नहीं दी। पर मेरा पिता तुम्हें स्वर्ग से सच्ची रोटी देता है। ३३ परमेश्वर की रोटी वह है जो स्वर्ग से उतरी। यह रोटी संसार को जीवन दे रही है।" ३४ उन्होंने यीशु से कहा, "प्रभु, हमें यह रोटी हमेशा दीजिए।" ३५ यीशु ने उनसे कहा, "जीवन की रोटी मैं हूं। जो मेरे पास आएगा उसे फिर कभी भूख नहीं लगेगी। जो मुझ पर विश्वास करता है, उसे फिर कभी प्यास नहीं लगेगी।

३६ "मैंने तुमसे कह दिया है कि तुमने मुझे देखा है पर तुम विश्वास नहीं करते। ३७ परमेश्वर ने जो व्यक्ति मुझे दिए हैं वे मेरे पास आएंगे। जो मेरे पास आएगा उसे मैं कभी बाहर नहीं निकालूंगा। ३८ मैं स्वर्ग से इसलिए नहीं उतरा कि अपनी इच्छा पूरी करूं पर मैं इसलिये उतरा हूं कि उसकी इच्छा पूरी करूं जिसने मुझे भेजा है। ३९ मुझे भेजने वाले की इच्छा यह है कि उसने जितने व्यक्ति मुझे दिए हैं मैं उनमें से किसी को न खोऊं, पर उन्हें अंतिम दिन में फिर जीवित करूं। ४० मेरे पिता की इच्छा यह है कि जो व्यक्ति पुत्र को देखकर उसपर विश्वास करता है, उसे अनन्त जीवन मिले, और मैं उसे अंतिम दिन में फिर जीवित करूं।"

४१ यहूदी उन पर कुड़कुड़ाने लगे क्योंकि उन्होंने कहा था, 'मैं वह रोटी हूं जो स्वर्ग से उतरी है।' ४२ वे कहने लगे, "क्या यह मनुष्य यूसुफ का पुत्र यीशु नहीं? क्या हम इसके माता-पिता को नहीं जानते? फिर यह कैसे कहता है कि यह स्वर्ग से उतरा है?" ४३ यीशु ने उत्तर दिया, "तुम आपस में क्यों बड़बड़ाते हो? ४४ मेरे पिता ने मुझे भेजा है। मेरे पास कोई व्यक्ति नहीं आ सकता। सिर्फ वही व्यक्ति मेरे पास आ सकता है जिसे मेरा पिता आकर्षित करता है। मैं अंतिम दिन में उसे फिर जीवित करूंगा। ४५ नबियों की पुस्तक में यह लिखा है 'वे सब परमेश्वर से शिक्षा पाएंगे।' प्रत्येक व्यक्ति जो पिता की आवाज सुनता और उससे शिक्षा पाता है वह मेरे पास आता है। ४६ मेरा मतलब यह नहीं कि किसी ने पिता को देखा है। सिर्फ उसने पिता को देखा है जो परमेश्वर की ओर से आया है। ४७ मैं तुमसे सच कहता हूं जो व्यक्ति विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है। ४८ मैं जीवन की रोटी

हूं ४६ तुम्हारे पूर्वजों ने निर्जन प्रदेश में मन्ना खाया और वे मर गए। ५० पर स्वर्ग से उतरी रोटी ऐसी है कि यदि कोई व्यक्ति उसे खाए तो कभी नहीं मरेगा। ५१ मैं वह जीवित रोटी हूं जो स्वर्ग से उतरी। यदि कोई व्यक्ति यह रोटी खाए तो वह अनन्त काल तक जीवित रहेगा। जो रोटी मैं दूंगा वह मेरा शरीर है जिससे संसार को जीवन मिले।"

५२ इसके कारण यहूदियों में वाद विवाद होन लगा। वे कहते थे 'यह मनुष्य हमें अपना शरीर खाने के लिये कैसे दे सकता है?' ५३ अतः यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुमसे सच कहता हूं कि यदि तुम मानव-पुत्र का शरीर न खाओ और न उसका रक्त पियो, तो तुममें जीवन नहीं। ५४ जो मेरा शरीर खाता और मेरा रक्त पीता है, अनन्त जीवन उसका है। मैं अंतिम दिन उसे फिर जीवित करूंगा। ५५ मेरा शरीर सच्चा भोजन है और मेरा रक्त सच्चा पेय। ५६ जो व्यक्ति मेरा शरीर खाता है और मेरा रक्त पीता है वह मुझ में रहता है और मैं उसमें। ५७ जीवित पिता ने मुझे भेजा है और पिता के कारण मैं जीवित हूं। वैसे ही मेरे कारण वह व्यक्ति भी जीवित रहेगा जो मुझे खाता है। ५८ यह रोटी स्वर्ग से उतरी है। यह रोटी उस रोटी के समान नहीं है जिसे पूर्वजों ने खाया और वे मर गए। पर इस रोटी को खाने वाला व्यक्ति अनन्तकाल तक जीवित रहेगा।" ५९ ये बातें यीशु ने कफ़रनहूम के सभागृह में शिक्षा देते समय कहीं।

अनन्त-जीवन का सन्देश

६० उनके कई शिष्यों ने यह सुनकर कहा "ये कठोर बातें हैं इन्हें कौन सह सकता है?" ६१ यीशु ने यह जान लिया कि उनके शिष्य इस बात पर बड़बड़ा रहे हैं। अतः उन्होंने उनसे कहा, "क्या इससे तुम्हारा विश्वास जाता रहा? ६२ यदि तुम मानव-पुत्र को वहां चढ़ते देखो जहां वह पहले था, तो क्या होगा? ६३ आत्मा जीवन देता है, मनुष्य मात्र से कोई लाभ नहीं। जो सन्देश मैंने तुम्हें दिया वह आत्मा है, जीवन है। ६४ पर तुममें से कुछ लोग विश्वास नहीं करते।" यीशु आरंभ से ही जानते थे कि कौन विश्वास नहीं करेंगे और कौन उन्हें पकड़वाएगा। ६५ अतः उन्होंने कहा, 'इसलिये मैंने कहा

दिया है कि कोई व्यक्ति मेरे पास नहीं आ सकता जब तक पिता उसे यह वरदान न दे।'

६६ इस कारण उनके बहुत से शिष्य उनसे अलग हो गए। उन्होंने यीशु के साथ जाना बन्द कर दिया। ६७ यीशु ने बारह प्रमुख शिष्यों से कहा, "क्या तुम भी जाना चाहते हो?" ६८ शमौन पतरस ने उन्हें उत्तर दिया, "प्रभु, हम किसके पास जाएंगे? अनन्त जीवन का सन्देश तो आपके पास
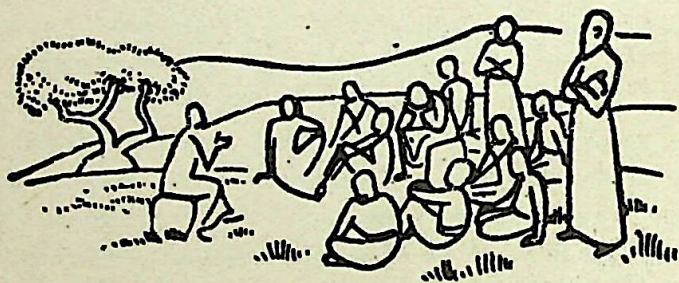
है। ६९ हमने विश्वास किया है और हम जानते है कि आप परमेश्वर के पवित्र व्यक्ति हैं।" ७० यीशु ने उनसे कहा, "क्या मैंने तुम बारह व्यक्तियों को नहीं चुना? पर तुम में से एक शैतान है।" ७१ यीशु ने यह यहूदा के विषय कहा था। यहूदा, इस्करियोत गाव के शमौन का पुत्र था। यही यहूदा, जो बारह शिष्यों में से एक था, यीशु को पकड़वाने वाला था।

यीशु के भाइयों में विश्वास की कमी

७ इसके बाद यीशु गलील प्रान्त में घूमते रहे। वह यहूदिया प्रान्त में घूमना नहीं चाहते थे क्योंकि यहूदी उनकी हत्या करने का मौका ढूढ़ रहे थे। २ यहूदियों का 'मण्डप-त्योहार' नजदीक था। ३ अत: यीशु के भाइयों ने उनसे कहा, "यह प्रांत छोड़कर यहूदिया प्रान्त जा जिससे तेरे शिष्य वे कार्य देखे जो तू करता है। ४ जो व्यक्ति यह चाहता है कि लोग उसे जाने

वह छिप कर कार्य नहीं करता। यदि तू ये कार्य करता है तो संसार में अपने आपको प्रकट कर।" ५ यीशु के भाई भी उन पर विश्वास नहीं करते थे। ६ यीशु ने उनसे कहा, "मेरे लिए अभी उचित समय नहीं आया है। तुम्हारे लिये हमेशा उचित समय है। ७ संसार तुमसे घृणा नहीं कर सकता। वह मुझसे घृणा करता है क्योंकि मैंने इसके विषय यह गवाही दी है कि इसके काम बुरे हैं। ८ तुम लोग त्योहार के लिये यरूशलेम जाओ। मैं इस त्योहार के लिये नहीं जा रहा हूं क्योंकि मेरा उचित समय अभी नहीं आया है।" ९ यह कहकर यीशु गलील में ही रुक गए।

मण्डप-त्योहार में यीशु

१० जब उनके भाई त्योहार के लिए चले गए तब यीशु भी गए। वह सब के सामने नहीं गए पर छिपकर गए। ११ त्योहार के समय यहूदी उन्हें खोज रहे थे। वे कहते थे, "वह व्यक्ति कहां है ?" १२ भीड़ में यीशु के विषय कानाफूसी होती थी। कुछ लोग कहते थे, "वह अच्छा व्यक्ति है।" अन्य कहते थे, "नहीं, वह लोगों को धोखा देता है।" १३ लोगों को यहूदियों का डर था इसलिए यीशु के विषय कोई व्यक्ति खुलकर बात नहीं करता था।

१४ जब त्योहार के आधे दिन समाप्त हो गए तो यीशु मंदिर गए और शिक्षा देने लगे। १५ यहूदी आश्चर्य करने लगे। वे कहते थे, "बिना प्रशिक्षण के यह मनुष्य शास्त्र का ज्ञान कैसे जानता है ?" १६ यीशु ने उन्हें उत्तर दिया "जो शिक्षा मैं देता हूं वह मेरी नहीं परन्तु उसकी है जिसने मुझे भेजा है। १७ जो व्यक्ति परमेश्वर की इच्छा पूरी करना चाहता है वह जान जाएगा कि यह शिक्षा परमेश्वर की ओर से है या मैं अपनी ओर से कहता हूं। १८ जो व्यक्ति अपनी ओर से बोलता है वह अपनी प्रशंसा चाहता है। पर वह व्यक्ति सच्चा है जो उसकी प्रशंसा चाहता है जिसने उसे भेजा है। उसमें कुछ भी धोखा नहीं। १९ क्या मूसा ने तुम्हें धर्म-नियम नहीं दिया ? तुममें से कोई भी धर्म-नियम का पालन नहीं करता। तुम मेरी हत्या क्यों करना चाहते हो ?" २० भीड़ ने उत्तर दिया, "तुझमें शैतान समाया है। कौन तुम्हारी हत्या करना चाहता है ?" २१ यीशु ने उन्हें उत्तर दिया,

"मैंने एक अद्‌भुत कार्य किया और तुम सब आश्चर्य करने लगे। २२ निश्चय मूसा ने तुम्हें खतने की विधि दी। जोभी मूसा ने यह प्रथा नहीं चलाई पर तुम्हारे पूर्वजों ने। तुम विश्राम-दिवस पर भी किसी पुरुष का खतना करते हो। २३ तुम विश्राम-दिवस पर एक मनुष्य का खतना कर सकते हो कि मूसा का धर्म-नियम न टूटे। यदि मैंने विश्राम-दिवस पर एक संपूर्ण मनुष्य को स्वस्थ किया तो तुम मुझसे क्यों क्रुध हो? २४ मुंह देखकर निर्णय न लो पर सच्चा न्याय करो।"

क्या यही मसीह है?

२५ यरूशलेम के रहने वाले कुछ लोगों ने कहा "क्या यही वह मनुष्य नहीं जिसकी वे हत्या करना चाहते हैं? २६ और देखो वह सबके सामने बोल रहा है! कोई व्यक्ति उसके विरुद्ध कुछ नहीं कह रहा है। क्या ऐसा हो सकता है कि अधिकारी भी जान गए कि यह मसीह है? २७ हम जानते हैं कि यह मनुष्य कहा का है। पर जब मसीह आएगा तो किसी को मालूम नहीं होगा कि वह कहाँ से आया।"

२८ यीशु मंदिर में शिक्षा दे रहे थे। उन्होंने जोर से कहा, "तुम मुझे जानते हो और यह भी जानते हो कि मैं कहा से आया हूं। मैं अपनी ही इच्छा से नहीं आया। जिसने मुझे भेजा है, वह सच्चा है। तुम उसे नहीं जानते। २९ मैं उसे जानता हूं क्योंकि मैं उसके पास से आया हूं और उसने मुझे भेजा है।" ३० उन्होंने यीशु को गिरफ्तार करना चाहा। पर किसी ने उन्हें नहीं पकड़ा क्योंकि उनका उचित समय नहीं आया था। ३१ भीड़ में से बहुतों ने उन पर विश्वास किया और कहा, "जब मसीह आएगा तो क्या वह इनसे अधिक अद्‌भुत चिन्ह दिखाएगा जो यह मनुष्य दिखाता है?"

यीशु की गिरफ्तारी के लिये सिपाही भेजे गये

३२ भीड़ यीशु के विषय कानाफूसी कर रही थी। फरीसियों ने उनका फुस-फुसाना सुना। महापुरोहितों तथा फरीसियों ने यीशु को गिरफ्तार करने के लिये सिपाही भेजे। ३३ यीशु ने कहा, "अभी और कुछ देर मैं तुम्हारे साथ

हूं। मैं उसके पास जा रहा हूं जिसने मुझे भेजा है। ३४ तुम मुझे ढूंढ़ोगे पर पाओगे नहीं। जहां मैं हूं वहां तुम नहीं आ सकते।" ३५ अतः यहूदी एक दूसरे से कहने लगे, "यह आदमी कहां जाने वाला है जो हम लोग उसे खोज नहीं सकेंगे ? क्या वह अन्य शहरों में यूनानियों के बीच बिखरे हुए यहूदियों के पास जाएगा और यूनानियों को शिक्षा देगा ? ३६ उसके यह कहने का क्या अर्थ है कि तुम मुझे ढूंढ़ोगे पर पाओगे नहीं, और जहां मैं हूं वहां तुम नहीं आ सकते ?"

जीवन-जल का स्रोत

३७ त्योहार का आखिरी दिन सबसे अधिक महत्व का था। उस दिन यीशु खड़े हुए और उन्होंने जोर से कहा, "यदि कोई प्यासा है तो मेरे पास आए और पिए। ३८ जो मुझ पर विश्वास करता है उसमें से—जैसा शास्त्र में लिखा है—जीवन-जल की धाराएं निकलेंगी।" ३९ उन्होंने यह आत्मा के विषय कहा था। जिन्होंने यीशु पर विश्वास किया था वे यह आत्मा प्राप्त करने वाले थे। अभी तक आत्मा नहीं दिया गया था क्योंकि अभी तक यीशु की महिमा नहीं हुई थी।

लोगों में मतभेद

४० यह सुनकर भीड़ के कुछ लोगों ने कहा, "निश्चय ही यह मनुष्य वह नबी है जो आने वाला था।" ४१ कुछ कहते थे, "यह व्यक्ति मसीह है।" पर अन्य कहते थे, "क्या मसीह गलील से आएगा ? ४२ क्या शास्त्र नहीं कहता, मसीह दाऊद के देश में जन्म लेगा और दाऊद के नगर बैतलहम से आएगा ?" ४३ इस तरह यीशु के कारण लोगों में मतभेद हो गया। ४४ उनमें से कुछ यीशु को गिरफ्तार करना चाहते थे। पर किसी ने उन्हें नही पकड़ा।

यहूदी अधिकारियों का अविश्वास

४५ सिपाही लौटकर आए। महापुरोहितों और फरीसियों ने उनसे पूछा, "तुम उसे क्यों नहीं लाए ?" ४६ सिपाहियों ने उत्तर दिया, "जैसी शिक्षा यह मनुष्य देता है वैसी शिक्षा किसी अन्य व्यक्ति ने कभी नहीं दी।" ४७ फरीसियो

ने उनसे कहा, "तो तुम भी धोखे में आ गए ? ४८ क्या किसी अधिकारी या किसी फरीसी ने उस पर विश्वास किया ? ४९ यह भीड़ धर्म-नियम नहीं जानती। ये लोग शापित हैं।" ५० अधिकारियों में से एक निकोदेमुस था। वह पहले यीशु के पास आया था। निकोदेमुस ने उनसे कहा, ५१ "क्या हमारा धर्म-नियम किसी मनुष्य का फैसला करने की अनुमति देता है जबकि पहले उसका बयान नहीं सुना गया और यह जाना नहीं गया कि वह मनुष्य क्या करता है ?" ५२ उन्होंने उसे उत्तर दिया, "क्या तुम भी गलील प्रान्त के हो ? शास्त्र में खोज करो और देखो कि गलील प्रान्त से नबी उत्पन्न नहीं होता।"

५३ सब अपने--अपने घर चले गये।

पाप में पकड़ी गई स्त्री

८ यीशु जैतून पहाड़ पर गए। २ दूसरे दिन प्रातः यीशु फिर मंदिर में आए। सब लोग उनके पास आए। यीशु बैठ गए और उन्हें शिक्षा देने
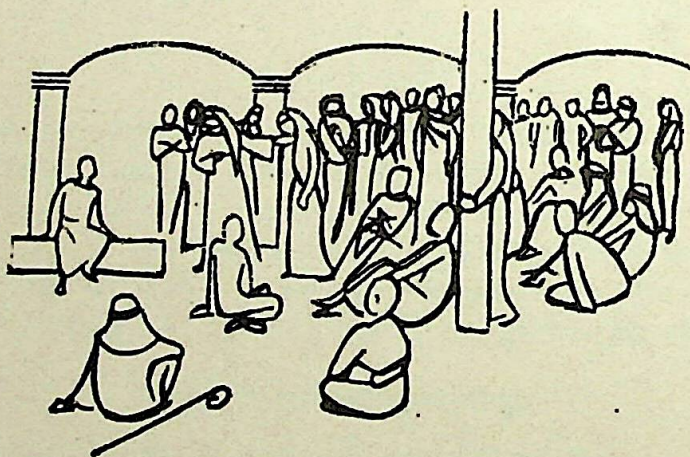
लगे। ३ धर्म-शिक्षक तथा फरीसी एक स्त्री को ले आए। यह स्त्री व्यभिचार में पकड़ी गई थी। उन्होंने उसे सबके बीच में खड़ा किया। ४ उन्होंने यीशु

से कहा, "गुरूजी, यह स्त्री व्यभिचार करते समय पकड़ी गई है। ५ मूसा ने हमें धर्म-नियम में यह आदेश दिया है कि ऐसी स्त्रियों को पत्थरों से प्रहार कर मार डाला जाए। अतः आप क्या कहते हैं?" ६ उन्होंने यीशु को परखने के लिये यह प्रश्न किया ताकि उन्हें यीशु पर दोष लगाने का मौका मिल सके। पर यीशु झुककर जमीन पर अपनी अगुली से लिखने लगे। ७ धर्म-शिक्षक और फरीसी उनसे प्रश्न पूछते रहे। अतः यीशु ने सिर उठाकर उनसे कहा, "तुम में से जिसने कभी पाप नहीं किया वह व्यक्ति पहले इस स्त्री को पत्थर मारे।" ८ यीशु पुनः झुककर जमीन पर लिखने लगे। ९ यीशु ने जो कहा, उसे उन लोगों ने सुना। वृद्धों से शुरू होकर सब, एक के बाद एक चले गए। सिर्फ यीशु रह गए और वह स्त्री वहीं खड़ी थी। १० यीशु ने सिर उठाकर स्त्री से कहा,

"हे स्त्री वे सब कहां हैं? किसी ने तुझ पर दोष नहीं लगाया?" ११ स्त्री ने कहा, "किसी ने नहीं प्रभु!" यीशु ने कहा, "मैं भी तुझ पर दोष नहीं लगाता हूं। जा, अब से फिर पाप न करना।"

संसार की ज्योति यीशु

१२ यीशु फिर शिक्षा देने लगे। उन्होंने कहा, "मैं संसार की ज्योति हूं। मेरा अनुसरण करने वाला अधकार में कभी नहीं चलेगा। पर उसे जीवन की ज्योति प्राप्त होगी।" १३ इस पर फरीसियों ने उनसे कहा, "आप अपने ही विषय गवाही देते हैं इसलिए आप की गवाही पर्याप्त नहीं।" १४ यीशु ने

उन्हें उत्तर दिया, "यद्यपि मैं अपने विषय गवाही देता हूं, फिर भी मेरी गवाही सच्ची है क्योंकि मैं जानता हूं कि मैं कहां से आया हूं और कहां जा रहा हूं। तुम नहीं जानते कि मैं कहां से आया हूं और कहां जा रहा हूं। १५ तुम मनुष्य की रीति से दोष लगाते हो। मैं किसी पर दोष नहीं लगाता। १६ यदि मुझे न्याय करना है तो मेरा फैसला ठीक है, क्योंकि मैं अकेला नहीं हूं। मेरे साथ पिता है जिसने मुझे भेजा है। १७ तुम्हारे धर्म-नियम में भी लिखा है कि दो मनुष्यों की गवाही पर्याप्त है। १८ मैं अपने विषय गवाही देता हूं और पिता, जिसने मुझे भेजा है, मेरे विषय गवाही देता है।" १९ अतः उन्होंने यीशु से पूछा, "आप के पिता कहां हैं ?" यीशु ने उत्तर दिया, "न तो तुम मुझे जानते हो और न ही मेरे पिता को। यदि तुम मुझे जानते तो मेरे पिता को भी जान लेते।" २० यीशु ने मंदिर में खजाने के कक्ष के पास ये बातें कहीं। किसी ने उन्हें नहीं पकड़ा, क्योंकि उनका उचित समय नहीं आया था।

जहां मैं जा रहा हूं वहां तुम नहीं जा सकते

२१ यीशु ने उनसे फिर कहा, "मैं तो जा रहा हूं। तुम मुझे ढूंढ़ोगे पर तुम अपने पाप में मरोगे क्योंकि जहाँ मैं जा रहा हूं वहां तुम नहीं जा सकते।" २२ अतः यहूदियों ने कहा, "क्या वह आत्म-हत्या करेगा ? वह तो कहता है कि जहां मैं जा रहा हूं वहां तुम नहीं जा सकते।" २३ यीशु ने उनसे कहा, "तुम पृथ्वी लोक के हो। मैं स्वर्ग लोक का हूं। तुम इस संसार के हो। मैं इस संसार का नहीं। २४ इसलिये मैंने तुमसे कहा कि तुम अपने पापों में मरोगे। यदि तुम विश्वास न करो कि मैं वह हूं तो तुम अपने पापों में मरोगे।" २५ इस पर उन्होंने यीशु से पूछा "आप कौन हैं ?" यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "वही जो मैं आरंभ से कहता आ रहा हूं। २६ मुझे तुम्हारे विषय में बहुत सी बातें कहनी हैं और फैसला करना है। जिसने मुझे भेजा है वह सच्चा है। मैंने उससे जो जो बातें सुनीं वे ही बातें मैं संसार में कहता हूं।" २७ वे नहीं जानते थे कि यीशु पिता के विषय कह रहे थे। २८ अतः यीशु ने कहा, "जब तुम मानव-पुत्र को ऊपर उठाओगे तब जानोगे कि मैं कौन हूं। मैं अपनी ओर से कुछ नहीं करता। जैसा पिता ने मुझे शिक्षा दी, मैं वैसा ही बोलता हूं। २९ जिसने मुझे भेजा है वह मेरे साथ है। उसने मुझे अकेला नहीं छोड़ा क्योंकि मैं हमेशा

वे ही कार्य करता हूं जिनसे वह प्रसन्न होता है।" ३० यीशु की बातें सुनकर बहुतों ने उन पर विश्वास किया।

सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा

३१ कई यहूदियों ने यीशु का विश्वास किया। यीशु ने उनसे कहा, "यदि तुम मेरी शिक्षा के अनुसार चलो तो सचमुच मेरे शिष्य हो। ३२ तुम यह जान लोगे कि सत्य क्या है और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।" ३३ उन्होंने यीशु से कहा, "हम अब्रहाम की सन्तान हैं और हम कभी किसी के गुलाम नहीं बने। फिर आप क्यों कहते हैं कि तुम लोग स्वतंत्र हो जाओगे?" ३४ यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "मैं तुमसे सच कहता हूं कि प्रत्येक व्यक्ति जो पाप करता है वह पाप का गुलाम है। ३५ एक गुलाम हमेशा के लिये किसी परिवार का सदस्य नहीं रहता। पर पुत्र परिवार का सदस्य हमेशा रहता है। ३६ यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करे तो तुम सचमुच स्वतंत्र होगे। ३७ मुझे मालूम है कि तुम अब्रहाम की संतान हो। पर तुम मेरी हत्या करने का मौका ढूंढ़ रहे हो क्योंकि तुम्हारे हृदय में मेरे सन्देश के लिये जगह नहीं है। ३८ जो कुछ मैंने अपने पिता के यहां देखा है वही बताता हूं। जो कुछ तुमने अपने पिता से सुना है वही करते हो।" ३९ उन्होंने यीशु को उत्तर दिया, "हमारा पिता तो अब्रहाम है।" यीशु ने उनसे कहा, "यदि तुम अब्रहाम की सन्तान होते तो अब्रहाम के कार्य भी करते। ४० मैं वह व्यक्ति हूं जिसने तुम्हें वह सत्य बताया है जो मैंने परमेश्वर से सुना है। पर तुम मेरी हत्या करने का मौका ढूंढ़ रहे हो। अब्रहाम ने ऐसा नहीं किया। ४१ तुम अपने पिता के कार्य करते हो।" उन्होंने यीशु से कहा, "हम व्यभिचार की सन्तान नहीं। हमारा एक ही पिता है—वह है परमेश्वर।" ४२ यीशु ने उनसे कहा, "यदि परमेश्वर तुम्हारा पिता होता तो तुम मुझसे प्रेम करते क्योंकि मैं परमेश्वर से निकला और आया हूं। मैं अपनी ही इच्छा से नहीं आया पर उसने मुझे भेजा है। ४३ तुम मेरी बातें क्यों नहीं समझते? इसलिए कि तुम मेरा सन्देश सुन नहीं सकते। ४४ तुम अपने पिता शैतान की सन्तान हो। तुम अपने पिता की इच्छा के अनुसार कार्य करना चाहते हो। वह आरंभ से ही हत्यारा था। उसने सत्य का पक्ष नहीं लिया

क्योंकि उसमें सत्य नहीं। जब वह झूठ बोलता है तब वह अपने स्वभाव के अनुसार बोलता है। वह झूठ बोलता है और झूठ का पिता है। ४५ तुम मेरा विश्वास नहीं करते क्योंकि मैं सत्य बोलता हूं। ४६ तुममें से कौन मुझ पर पाप का दोष लगाता है ? यदि मैं सत्य बोलता हूं तो तुम मेरा विश्वास क्यों नहीं करते ? ४७ जो व्यक्ति परमेश्वर की ओर से है वह परमेश्वर के शब्द सुनता है। तुम परमेश्वर की सन्तान नहीं हो इसलिए तुम परमेश्वर की नहीं सुनते।"

अब्राहाम मेरे बाद आया

४८ यहूदियों ने यीशु को उत्तर दिया, "क्या हम ठीक नहीं कहते कि तू सामरी है और तुझमें शैतान समाया हुआ है ?" ४९ यीशु ने उत्तर दिया, "मुझ में शैतान नहीं है। मैं अपने पिता का आदर करता हूं। पर तुम मेरा अपमान करते हो। ५० मैं अपनी महिमा नहीं चाहता। एक है जो मेरी महिमा चाहता और मेरे पक्ष में न्याय करता है। ५१ मैं तुमसे सच कहता हूं, यदि कोई व्यक्ति मेरी शिक्षा मानता है तो वह कभी नहीं मरेगा।" ५२ यहूदियों ने उनसे कहा, "अब हम जान गए हैं कि तुम में शैतान है। अब्रहाम मर गए और नबी भी। तू कहता है—यदि कोई व्यक्ति मेरी शिक्षा मानता है तो वह कभी नहीं मरेगा। ५३ क्या तू हमारे पिता अब्रहाम से महान है ? वे तो मर गए और नबी भी। तू क्या कहता है कि तू कौन है ?" ५४ यीशु ने उत्तर दिया, "यदि मैं अपनी प्रशंसा करता हूं तो मेरी प्रशंसा का कोई महत्व नहीं। मेरा पिता मेरी महिमा करता है, जिसे तुम अपना परमेश्वर कहते हो। ५५ पर तुम उसे नहीं जानते हो। मैं उसे जानता हूं। यदि मैं कहूं कि मैं उसे नहीं जानता तो मैं तुम्हारे समान झूठा ठहरूंगा। पर मैं उसे जानता हूं और उसका आदेश मानता हूं। ५६ तुम्हारा पिता अब्रहाम प्रसन्न था कि वह मेरा दिन देखेगा। उसने यह देखा और वह आनंदित हुआ।" ५७ इस पर यहूदियों ने उनसे कहा, "अभी तू पचास वर्ष का भी नहीं हुआ है और तू ने अब्रहाम को देख लिया ?" ५८ यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुमसे सच कहता हूं कि अब्रहाम के जन्म लेने के पहले से मैं हूं।" ५९ यहूदियों ने यीशु को मारने के लिये पत्थर उठाए। पर यीशु छिप गए और मंदिर से बाहर चले गए।

यीशु जन्म के अन्धे व्यक्ति को स्वस्थ करते हैं

९ यीशु मार्ग से जा रहे थे। उन्होंने एक अन्धे मनुष्य को देखा। वह मनुष्य जन्म से अंधा था। २ उनके शिष्यों ने उनसे पूछा, "गुरूजी यह मनुष्य अन्धा पैदा हुआ था। किसने पाप किया था? इसने या इसके माता-पिता ने?" ३ यीशु ने उत्तर दिया, "न तो इस व्यक्ति ने पाप किया और न ही इसके माता-पिता ने। यह इसलिए अन्धा है कि इसमें परमेश्वर के कार्य प्रकट किए जाएं। ४. जब तक दिन है हमें उसके कार्य करना चाहिये जिसने मुझे भेजा है। रात आने वाली है। रात के समय कोई व्यक्ति कार्य नहीं कर सकता। ५ जब तक मैं संसार में हूं मैं संसार की ज्योति हूं।" ६ यह कह कर यीशु ने जमीन पर थूका। उन्होंने थूक से मिट्टी सान कर लेप बनाया। उन्होंने वह लेप अंधे की आंखों पर लगाया ७ और उससे कहा, "शिलोम के कुण्ड जाओ और अपनी आँखें धो लो।" (शिलोम का अर्थ है भेजा हुआ।) अतः वह मनुष्य शिलोम के कुण्ड गया। उसने अपनी आँखें धोईं और देखता हुआ

लौटा। ८ उसके पड़ोसियों ने तथा अन्य कई लोगों ने उसे पहले भीख मांगते देखा था। वे कहने लगे, "क्या यह वही मनुष्य नहीं है जो बैठकर भीख मांगा करता था?" ९ कुछ लोग कहते थे, "यह वही व्यक्ति है।" अन्य कहते थे,

"नहीं। यह उस व्यक्ति के समान है।" उसने कहा, "मैं तो वही हूं।" १० उन्होंने उससे पूछा, "तेरी आंखें कैसे खुलीं?" ११ उस मनुष्य ने उत्तर दिया, "यीशु नामक व्यक्ति ने मिट्टी का लेप बनाया और उसे मेरी आंखों पर मल दिया। उसने मुझसे कहा, 'शिलोम के कुण्ड जाओ और अपनी आंखें धो लो।' अतः मैं गया, धोया और देखने लगा।" १२ उन्होंने उससे पूछा, "वह व्यक्ति कहां है?" उस मनुष्य ने कहा, " मैं नही जानता।"

फरीसियों द्वारा अन्धे के स्वस्थ होने की जांच-पड़ताल

१३ लोग उस मनुष्य को जो पहले अंधा था फरीसियों के पास ले गए। १४ वह विश्राम-दिवस था जब यीशु ने मिट्टी का लेप बनाया और उस मनुष्य की आँखें खोलीं थी। १५ फरीसियों ने फिर उस मनुष्य से पूछा कि वह कैसे देखने लगा। उसने उनसे कहा, "उसने मेरी आंखों पर मिट्टी का लेप लगाया। मैंने उन्हें धोया और अब मैं देखता हूं।" १६ इस पर कुछ फरीसियो ने कहा, "वह मनुष्य परमेश्वर की ओर से नहीं है क्योंकि वह विश्राम-दिवस का नियम तोड़ता है।" पर अन्य लोगों ने कहा, "एक पापी मनुष्य इस प्रकार के अद्भुत चिन्ह कैसे दिखा सकता है?" उनमें मतभेद हो गया। १७ उन्होंने उस मनुष्य से पुनः पूछा, "उस व्यक्ति ने तेरी आंखें खोल दी हैं। तू उसके विषय क्या कहता है?" उसने उत्तर दिया "वह एक नवी है।"

१८ यहूदियों को उस समय तक विश्वास नहीं हुआ कि वह मनुष्य अन्धा था और अब देखने लगा है जब तक उन्होंने उसके माता-पिता को नहीं बुलाया। १९ उन्होंने उसके माता-पिता से पूछा, "क्या यह तुम्हारा पुत्र है जिसके विषय तुम कहते हो कि यह अन्धा पैदा हुआ था? तो फिर अब यह कैसे देखता है?" २० उसके माता-पिता ने उत्तर दिया, "हम जानते हैं कि यह हमारा पुत्र है और यह अन्धा पैदा हुआ था। २१ परन्तु हम यह नहीं जानते कि अब यह कैसे देख सकता है। हम यह भी नहीं जानतें कि किसने उसकी आंखें खोलीं। उसी से पूछिए। वह समझदार है। वह स्वयं अपने विषय कहेगा।" २२ उस मनुष्य के माता-पिता को यहूदियों का डर था इसलिए उन्होंने ये बातें कहीं। यहूदियों ने आपस में यह निर्णय लिया था:

यदि कोई व्यक्ति यीशु को मसीह स्वीकार करे तो उस व्यक्ति को सभागृह की सदस्यता से निकाल दिया जाएगा। २३ इस कारण उसके माता-पिता ने कहा था—'वह समझदार है। उससे पूछिए।'

२४ उन्होंने दूसरी बार उस मनुष्य को बुलाया जो अंधा था। उन्होंने उससे कहा, "सच बोल और परमेश्वर की महिमा कर। हम जानते हैं कि वह मनुष्य पापी है।" २५ उसने उत्तर दिया, "मैं यह नहीं जानता कि वह पापी है या नहीं। पर मैं एक बात जानता हूं कि मैं अंधा था और अब देख सकता हूं।" २६ उन्होंने उससे पूछा, "उसने तुम्हारे लिए क्या कि ? उसने तुम्हारी आंखें कैसे खोल दी ?" २७ उस मनुष्य ने उत्तर दिया, "मैं आप को बता चुका हूं पर आपने सुना नहीं। आप फिर से क्यों सुनना चाहते हैं ? क्या आप लोग भी उनके शिष्य बनना चाहते हैं ?" २८ उन्होंने उस मनुष्य को भला-बुरा कहा। उन्होंने कहा, "तुम उस मनुष्य के शिष्य हो। हम तो मूसा के शिष्य हैं। २९ हम जानते हैं कि परमेश्वर ने मूसा से बातें की हैं। पर हम नहीं जानते कि वह व्यक्ति कहां से आया है।" ३० उस मनुष्य ने उन्हें उत्तर दिया, "कितने आश्चर्य की बात है ? आप यह नहीं जानते कि वह कहां से आया और उसने मेरी आंखें खोल दीं ! ३१ हम जानते हैं कि परमेश्वर पापी मनुष्यों की नहीं सुनता। यदि कोई परमेश्वर का भय मानता है और उसकी इच्छानुसार कार्य करता है तो परमेश्वर उस मनुष्य की सुनता है। ३२ क्या संसार के प्रारंभ से कभी यह सुना गया कि किसी व्यक्ति ने एक जन्म-के-अन्धे की आंखें खोलीं ? ३३ यदि वह मनुष्य परमेश्वर की ओर से नहीं होता तो वह कुछ नहीं कर सकता।" ३४ उन्होंने उसे उत्तर दिया, "तू पाप में ही पैदा हुआ है। तू हमें सिखाने वाला कौन है ?" उन्होंने उसे सभागृह की सदस्यता से निकाल दिया।

आत्मा का अंधापन

३५ यीशु ने सुना कि यहूदियों ने उस मनुष्य को सभागृह से निकाल दिया है। जब यीशु उससे मिले तब उन्होंने उससे पूछा, "क्या तू मानव-पुत्र पर विश्वास करता है ?" ३६ उस मनुष्य से उत्तर दिया, "महाशय, मुझे

बताइए वे कौन हैं कि मैं उन पर विश्वास करूं ।" ३७ यीशु ने उससे कहा, "तू ने उसे देखा है और जो व्यक्ति तुझसे बातें कर रहा है, वही है।" ३८ उसने कहा, "प्रभु, मैं विश्वास करता हूं।" उस मनुष्य ने झुककर यीशु को प्रणाम किया।

३९ यीशु ने कहा, "मैं इस संसार में न्याय के लिये आया हूं जिससे अंधे देख सकें और दृष्टि वाले अन्धे हो जाएं।" ४० कुछ फरीसी उनके साथ थे। उन्होंने ये बातें सुनीं। उन्होंने यीशु से कहा, "क्या हम भी अन्धे हैं ?" ४१ यीशु ने उनसे कहा, "यदि तुम अंधे होते तो पाप में न रहते पर अब तुम कहते हो कि हम देखते हैं इसलिए तुम्हारा पाप बना रहता है।"

भेड़ों के झुण्ड की कथा

१० मैं तुमसे सच कहता हूं, जो व्यक्ति भेंड़शाले में द्वार से प्रवेश नहीं करता पर कहीं और से चढ़कर प्रवेश करता है वह चोर और डाकू है। २ जो व्यक्ति द्वार से प्रवेश करता है वह भेड़ों का गड़रिया है। ३ उसके लिये चौकीदार द्वार खोलता है। उसकी भेड़ें उसकी आवाज सुनतीं हैं। वह अपनी भेड़ों का नाम लेकर बुलाता है और उन्हें बाहर ले जाता है। ४ जब वह अपनी सब भेड़ों को भेड़शाले से बाहर निकाल लेता है तब वह उनके आगे-आगे चलता है। उसकी भेड़ें उसके पीछे-पीछे जाती हैं क्योंकि वे उसकी आवाज पहचानती हैं। ५ वे किसी अनजान व्यक्ति के पीछे कभी नहीं जातीं। वे उससे दूर भागती हैं क्योंकि वे अनजान व्यक्तियों की आवाज
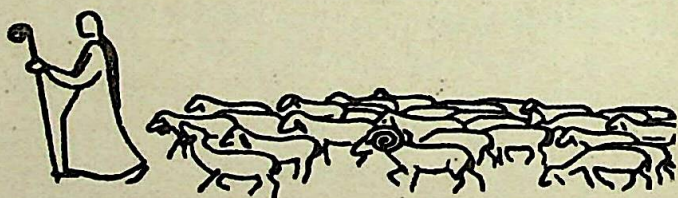
नहीं पहचानतीं।" ६ यीशु ने उन्हें यह कथा सुनाई। पर वे लोग नहीं समझ सके कि वह उन्हें क्या बता रहे थे।

आदर्श गड़रिया

७ यीशु ने फिर कहा, "मैं तुमसे सच कहता हूं कि मैं भेड़शाले का द्वार हूं। ८ मुझसे पहले जो लोग आए थे, चोर और डाकू थे। भेड़ों ने उनकी न सुनी। ९ द्वार मैं ही हूं। जो मेरे द्वारा प्रवेश करता है वह सुरक्षित रहेगा। वह भीतर-बाहर आया-जाया करेगा। वह चारा पाएगा। १० चोर सिर्फ इसलिये आता है कि वह चोरी करे, हत्या करे और नष्ट करे। मैं इसलिए आया हूं कि वे जीवन पाएं और बहुतायत से जीवन पाएं। ११ आदर्श गड़रिया मैं हूं। आदर्श गड़रिया भेड़ों के लिये अपना प्राण देता है। १२ नौकर वह गडरिया नहीं है जिसकी अपनी भेड़ें हों। नौकर जब देखता है कि भेड़िया आ रहा है तब वह भेड़ों को छोड़कर भाग जाता है। भेड़िया भेड़ों को पकड़ता और तितर-बितर कर देता है। १३ वह नौकर है और उसे भेड़ों की चिन्ता नहीं। १४-१५ आदर्श गड़रिया मैं हूं। जिस प्रकार पिता मुझे जानता है और मैं पिता को जानता हूं उसी प्रकार मैं अपनी भेड़ों को जानता हूं और मेरी भेड़ें मुझे पहचानती हैं। मैं भेड़ों के लिये अपना प्राण देता हूं। १६ मेरी और भी भेड़ें हैं। वे इस भेडशाले की नहीं हैं। यह आवश्यक है कि मैं उन्हें भी ले आऊं। वे मेरी आवाज सुनेंगी। तब एक ही झुण्ड होगा और एक ही गड़रिया। १७ मैं अपना प्राण दे रहा हूं कि उसे फिर प्राप्त करूं। इस कारण पिता मुझसे प्रेम करता है। १८ कोई मेरा प्राण मुझ से नहीं छीन रहा है। पर मैं स्वयं अपना प्राण दे रहा हूं। मुझे अपना प्राण देने का अधिकार है और अपना प्राण फिर प्राप्त करने का भी अधिकार है। यह आदेश मेरे पिता ने मुझे दिया है।" १९ इन बातों के कारण यहूदियों में फिर मतभेद हो गया। २० उनमें से बहुत ने कहा, "इसमें शैतान है। वह अनाप-शनाप बकता है। तुम उसकी क्यों सुनते हो?" २१ अन्य लागों ने कहा, "ऐसी बातें वह व्यक्ति नहीं कर सकता जिसमें शैतान समाया हो। क्या एक शैतान किसी अन्धे व्यक्ति की आंखें खोल सकता है?"

यहूदी यीशु का तिरस्कार करते हैं

२२ शीतऋतु थी। यरूशलेम में मंदिर के अर्पण का त्योहार मनाया जा रहा था। २३ यीशु मंदिर में सुलेमान के बरामदे में घूम रहे थे।

२४ कुछ यहूदी आए। वे यीशु के चारों ओर खड़े हो गए। उन्होंने यीशु से पूछा, "आप कब तक हमें दुविधा में रखेंगे ? यदि आप मसीह हैं तो हमें साफ़-साफ बता दीजिये।" २५ यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "मैंने तुम्हें बता दिया है पर तुम विश्वास नहीं करते। मैं अपने पिता के नाम से कार्य करता हूं। ये कार्य मेरे विषय गवाही देते हैं। २६ तुम मेरी भेड़ें नहीं हो इसलिये तुम विश्वास नहीं करते। २७ मैं अपनी भेड़ों को जानता हूँ। वे मेरी आवाज़ पहचानती हैं और मेरे पीछे-पीछे आती हैं। २८ मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूं। वे कभी नाश न होएंगी। न ही कोई उन्हें मेरे हाथ से छीनेगा। २९ उन्हें मेरे पिता ने मुझे दिया है। मेरा पिता सबसे महान है। कोई व्यक्ति उन्हें मेरे पिता के हाथ से नहीं छीन सकता। ३० मैं और मेरा पिता एक हैं।"

३१ यहूदियों ने यीशु को मारने के लिये फिर पत्थर उठाए। ३२ यीशु ने उनसे कहा, "मैंने अपने पिता की ओर से तुम्हें अनेक अच्छे कार्य दिखाए हैं। उनमें से किस कार्य के लिये तुम मुझ पर पथराव करना चाहते हो ?" ३३ यहूदियों ने उन्हें उत्तर दिया, "हम किसी अच्छे कार्य के कारण तुझे पत्थर नहीं मार रहे हैं पर इसलिए कि तूने परमेश्वर की निन्दा की है। तू एक मनुष्य है और अपने आपको ईश्वर कहता है !" ३४ यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "क्या तुम्हारे धर्म-नियम में यह नहीं लिखा है—'मैंने कहा, तुम ईश्वर हो।' ३५ शास्त्र का वचन तोड़ा नहीं जा सकता। परमेश्वर ने उन्हें ईश्वर कहा जिनके पास परमेश्वर का वचन भेजा गया। ३६ यदि मैंने कहा कि मैं परमेश्वर का पुत्र हूं तो तुम मुझसे क्यों कहते हो—कि तू परमेश्वर की निन्दा करता है ? मुझे तो परमेश्वर ने पवित्र ठहराया और इस संसार में भेजा है। ३७ यदि मैं अपने पिता के कार्य नहीं करता हूं तो मेरा विश्वास न करो। ३८ यदि मैं परमेश्वर के कार्य करता हूँ तो, जोभी तुम मेरा विश्वास नहीं करते, इन कार्यों पर विश्वास करो। इस तरह तुम जान जाओगे और हमेशा याद रखोगे कि पिता मुझ में है और मैं पिता में हूं।" ३९ उन्होंने यीशु को गिरफ्तार करने की फिर कोशिश की। पर यीशु उनके हाथ से बच निकले।

४० यीशु फिर यर्दन नदी के उस पार चले गए। वह उस स्थान पर गए जहां पहले बपतिस्मादाता यूहन्ना बपतिस्मा दिया करता था। वह उसी

स्थान पर रुके। ४१ बहुत लोग उनके पास आए। वे कहते थे–"यूहन्ना ने कोई अद्‌भुत चिन्ह नहीं दिखाए। पर यूहन्ना ने जितनी बातें इस व्यक्ति के विषय कही थीं वे सच थीं।" ४२ उस स्थान पर वहां बहुत लोगों ने यीशु पर विश्वास किया।

लाजर की मृत्यु

११ मरियम और मारथा बहिनें थीं। वे बैथनियाह में रहती थीं। वहां लाजर नामक एक व्यक्ति बीमार था। २ लाजर मरियम का भाई था। यह वही मरियम है जिसने प्रभु के चरणों में सुगंधित द्रव्य लगाया था और उन्हें अपने सिर के बालों से पोंछा था। ३ दोनों बहिनों ने यीशु के पास खबर भेजी—"प्रभु, जिससे आप प्रेम करते हैं वह बीमार है।" ४ यीशु ने यह सुनकर कहा,–"इस बीमारी का अन्त मृत्यु नहीं है पर इससे परमेश्वर की महिमा होगी। इस बीमारी के द्वारा परमेश्वर-पुत्र की महिमा होगी।" ५ यीशु मारथा, उसकी बहिन तथा लाजर से प्रेम करते थे। ६ जब यीशु ने यह सुना कि लाजर बीमार है तो वे उसी स्थान पर जहां वे थे दो दिन और रुके। ७ इसके बाद उन्होंने अपने शिष्यों से कहा, "चलो, हम फिर यहूदिया प्रांत में जाएं।" ८ शिष्यों ने उनसे कहा, "गुरुजी, अभी यहूदी लोग पत्थरों से मारकर आपकी हत्या करने का मौका ढूंढ रहे थे। आप फिर वहां जाना चाहते हैं?" ९ यीशु ने उत्तर दिया, "क्या दिन बारह घण्टे का नहीं होता? यदि कोई दिन में चलता है तो वह ठोकर नहीं खाता क्योंकि वह इस संसार की रोशनी देखता है। १० पर रात में चलने वाला व्यक्ति ठोकर खाता है क्योंकि उसमें रोशनी नहीं है।" ११ ये बातें कहने के बाद यीशु ने शिष्यों से कहा, "हमारा मित्र लाजर सो गया है। मैं वहां जा रहा हूं कि उसे जगाऊं।" १२ इस पर शिष्यों ने उनसे कहा, "प्रभु, यदि वह सो गया है तो अच्छा हो जाएगा।" १३ यीशु ने लाजर की मृत्यु के विषय कहा था। पर शिष्यों ने सोचा कि यीशु उसके निन्द्रा से सो जाने के विषय कह रहे हैं। १४ तब यीशु ने उन्हें साफ-साफ बताया –"लाजर मर गया है। १५ मुझे तुम्हारे लिए खुशी है कि मैं वहां नहीं था ताकि तुम विश्वास कर सको।" १६ इस पर थोमा ने

अपने साथी शिष्यों से कहा, "चलो, हम भी चलें ताकि हम भी उनके साथ मरें।" (थोमा का अर्थ है जुड़वा[1])

यीशु ही मृतकों का उत्थान और जीवन हैं

१७ जब यीशु बैथनियाह पहुंचे तो लाज़र को कवर में रखे चार दिन हो चुके थे। १८ बैथनियाह यरूशलेम से लगभग तीन किलो-मीटर है।

१९ यरूशलेम से कई यहूदी मरियम और मारथा के घर आए थे। वे उन्हें उनके भाई की मृत्यु पर सांत्वना देने आए थे। २० मारथा ने सुना कि यीशु आ रहे हैं। वह उनसे मिलने गई। पर मरियम घर में बैठी रही। २१ मारथा ने यीशु से कहा, "प्रभु यदि आप यहां होते तो मेरा भाई नहीं मरता। २२ पर मैं जानती हूं कि आप परमेश्वर से अब जो भी मांगेंगे, परमेश्वर वह आपको देगा।" २३ यीशु ने उससे कहा, "तुम्हारा भाई फिर जीवित होगा।" २४ मारथा ने उनसे कहा, "मैं जानती हूं कि अंतिम दिन में सब मृतक फिर जीवित किए जाएंगे। उस समय लाज़र भी जीवित होगा।" २५ यीशु ने उससे कहा, "मैं मृतकों का उत्थान और जीवन हूं। मुझ पर विश्वास करने वाला व्यक्ति यदि मर भी जाए तो वह जीवित रहेगा। २६ जो व्यक्ति जीवित है और मुझ पर विश्वास करता है वह कभी नहीं मरेगा। क्या तू इस पर विश्वास करती है?" २७ उसने यीशु से कहा, "हां प्रभु, मैंने विश्वास कर लिया कि आप परमेश्वर के पुत्र हैं। आप वह मसीह हैं जो संसार में आने वाला था।"

यीशु रोते हैं

२८ मारथा यह कह कर लौट आई। उसने अपनी बहिन मरियम को अलग बुलाया और उससे कहा, "गुरूजी यहां हैं और वे तुझे बुला रहे हैं।" २९ मरियम यह सुनकर जल्दी-जल्दी उठी और यीशु से मिलने गई। ३० यीशु अभी तक नगर के भीतर नहीं आए थे। वे उसी स्थान पर थे जहां मारथा

[1] मूल में दिदुमस

उनसे मिली थी। ३१ मरियम के साथ घर में कुछ यहूदी थे जो उसे सांत्वना दे रहे थे। उन्होंने मरियम को जल्दी-जल्दी उठकर घर से जाते देखा। उन्होंने सोचा कि मरियम लाज़र की कबर पर रोने जा रही है। अतः वे उसके पीछे-पीछे गए।

३२ मरियम उस स्थान पर पहुंची जहां यीशु थे। उन्हें देखकर वह उनके चरणों पर गिरी। उसने यीशु से कहा, "प्रभु यदि आप यहां होते तो मेरा भाई नही मरता।" ३३ जब यीशु ने मरियम को रोते देखा तथा उसके साथ आए यहूदियों को रोते देखा तो उनकी आत्मा कराह उठी। वे बहुत दुखित हुए। ३४ उन्होंने पूछा, "तुमने उसे कहां दफनाया है?" लोगों ने कहा, "प्रभु आइए और देख लीजिए।" ३५ यीशु के आंसू बह निकले। ३६ अतः यहूदियों ने कहा, "देखो वह लाज़र से कितना प्रेम करते थे।" ३७ पर उनमें से कुछ ने कहा, "इन्होंने अंधे मनुष्य की आंखें खोलीं। क्या ये लाज़र की मृत्यु नहीं रोक सकते थे?"
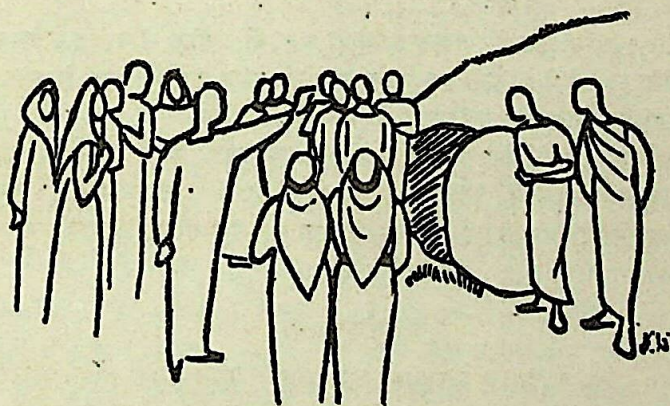
यीशु लाज़र को फिर जीवित करते हैं

३८ यीशु ने फिर एक कराह ली। वे कबर के पास आए। वह एक गुफा जैसी थी। उस पर एक पत्थर रखा हुआ था। ३९ यीशु ने कहा,

"पत्थर हटाओ ।" मृतक की बहिन मारथा ने उनसे कहा, "प्रभु अब तो दुर्गन्ध आती होगी । आज उसे दफनाए चौथा दिन है ।" ४० यीशु नें उनसे कहा, "क्या मैंने तुझसे नहीं कहा कि यदि तू विश्वास करती है तो तू परमेश्वर की महिमा देखेगी ?" ४१ अत: लोगों ने पत्थर हटाया । यीशु ने ऊपर की ओर देखा और कहा, "पिता, मैं तुझे धन्यवाद देता हूं कि तू ने मेरी प्रार्थना सुनी । ४२ मैं जानता था कि तू हमेशा मेरी सुनता है । मैंने यह इसलिए कहा कि पास खड़ी भीड़ विश्वास करे कि तू ने मुझे भेजा है ।" ४३ यह कहने के बाद यीशु ने बड़ी जोर से पुकार कर कहा, "लाज़र ! बाहर आ ।" ४४ जो मर गया था वह बाहर आया । उसके हाथ-पांव में कफ़न की पट्टियां बंधी थीं । उसका सिर अगोछे से लपेटा गया था । यीशु ने लोगों से कहा, "उसे खोल दो और जाने दो ।"

यीशु के विरुद्ध षड्यंत्र

४५ मरियम के घर कई यहूदी आए थे । यीशु ने जो कुछ किया था वह सब उन्होंने देखा था । उनमें से अनेक ने यीशु पर विश्वास किया । ४६ पर उनमें से कुछ लोग फरीसियों के पास गए । उन्होंने फरीसियों को वह सब बताया जो यीशु ने किया था । ४७ अत: महापुरोहितों और फरीसियों ने महासभा बुलाई । उन्होंने कहा, "हम क्या कर रहे हैं ? वह मनुष्य तो बहुत से अद्भुत चिन्ह दिखा रहा है । ४८ यदि हम उसे इस तरह छोड़ दें तो सब लोग उस पर विश्वास करेंगे । तब रोमन हमारे इस पवित्र स्थान और राष्ट्र को नष्ट कर देंगे ।" ४९ उनमें कैफा नामक एक व्यक्ति था । वह उस वर्ष का महापुरोहित था उसने कहा, "आप लोग कुछ नहीं जानते हैं । ५० आप यह नहीं समझते कि हमारे लिए यह उचित है कि पूरी जाति के लिये एक व्यक्ति मरे । पूरा राष्ट्र नष्ट न हो ।" ५१ उसने यह अपनी ओर से नहीं कहा । वह उस वर्ष का महापुरोहित था इसलिए उसने यह नबूवत की कि यीशु राष्ट्र के लिये मरेगा । ५२ यीशु न केवल राष्ट्र के लिये ही मरेगा परन्तु परमेश्वर की सन्तान को एकत्र करने के लिये जो इधर-उधर बिखर गई थी । ५३ उस दिन से वे यीशु की हत्या का षडयंत्र रचने लगे ।

५४ अब यीशु यहूदियों के बीच आया-जाया नहीं करते थे। वे मरुस्थल के पास के क्षेत्र में इफ्राईम नामक शहर में चले गए। वह शिष्यों के साथ वहां रहने लगे।

५५ यहूदियों का फसह-त्योहार नजदीक था। अतः बहुत से लोग गांवों और देहातों से यरूशलेम गए। वे अपने आपको शुद्ध करने के लिये फसह-त्योहार के पहले ही यरूशलेम गए। ५६ यहूदी यीशु की खोज में थे। मंदिर में खड़े होकर वे आपस में कहते थे, "तुम क्या सोचते हो ? क्या वह त्योहार में नहीं आएगा ?" ५७ महापुरोहितों और फरीसियों ने यह आदेश दे रखा था कि यदि किसी को यह पता लगे कि यीशु कहां है तो खबर दे जिससे वे यीशु को गिरफ्तार कर सकें।

मरियम यीशु के चरणों में कीमती द्रव्य लगाती है

१२ फसह-त्योहार के छः दिन पहले यीशु बैथनियाह में आए। बैथनियाह में लाजर रहता था। यीशु ने लाजर को मृतकों में से फिर जीवित किया था। २ वहाँ यीशु के लिए एक भोज तैयार किया गया। मारथा परोसने में लगी थी। यीशु के साथ भोज में बैठे लोगों में लाज़र भी था। ३ मरियम सवा तीन सौ ग्राम शुद्ध जटामासी का कीमती द्रव्य लाई। उसने वह सुगंधित द्रव्य यीशु के चरणों में लगाया। वह उनके चरणों को अपने बालों से पोंछ रही थी। द्रव्य की सुगंध से पूरा घर भर गया था। ४ यहूदा इस्कारियोती शिष्यों में एक था। वह यीशु को गिरफ्तार करवाने वाला था। उसने कहा, ५ "यह द्रव्य तीन सौ रुपयों में क्यों नहीं बेचा गया ? वह धन गरीबों को दिया जा सकता था।" ६ उसने यह इसलिए नहीं कहा कि उसे गरीबों की चिन्ता थी। वह चोर था। उसके पास खजाने की थैली रहती थी। जो कुछ खजाने में डाला जाता, वह उसमें से निकाल लेता था। ७ यीशु ने कहा, "उसे रहने दो। वह मेरे दफ़नाए जाने के लिये यह कर रही है। ८ गरीब तुम्हारे साथ हमेशा रहेंगे। मैं तुम्हारे साथ हमेशा नहीं रहूंगा।"

लाज़र के विरुद्ध षड्यंत्र

९ यहूदियों की एक भीड़ को पता चला कि यीशु वहां हैं। वे सिर्फ यीशु के कारण वहां नहीं आए पर लाज़र को देखने आए जिसे यीशु ने उसकी

मृत्यु के बाद फिर जीवित किया था। १० महापुरोहितों ने लाज़र की भी हत्या करने का षड्यंत्र रचा ११ क्योंकि उसके कारण बहुत से यहूदी आकर यीशु पर विश्वास करने लगे थे।

उल्लास के साथ यरूशलेम में प्रवेश

१२ अगले दिन एक बड़ी भीड़ त्योहार के लिये आई। लोगों ने सुना कि यीशु यरूशलेम आ रहे हैं। १३ उन्होंने खजूर की डालियां हाथ में लीं और वे यीशु से मिलने के लिये शहर से बाहर गए। वे चिल्लाते जा रहे थे—"प्रभु हमारा उद्धार करे। धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आ रहा है! इस्राएल का राजा धन्य है!" १४ यीशु को गदहे का एक बच्चा मिला। वह उस पर बैठ गए। शास्त्र में भी ऐसा ही लिखा है:

१५ 'सियोन की पुत्री, मत डर
देख तेरा राजा आ रहा है
वह गदहे के बच्चे पर बैठकर आ रहा है।'

१६ यीशु के शिष्य इन बातों को पहले नहीं समझते थे। पर जब यीशु महिमा में उठाए गए तब उन्हें स्मरण आया कि शास्त्र की ये बातें यीशु के विषय लिखी गई थीं और लोगों ने उनके प्रति ऐसा ही किया। १७ जब यीशु ने लाज़र को कबर से बुलाया था तथा मृतकों में से फिर जीवित किया था तब कुछ लोग उनके साथ थे। उन्होंने उसके विषय सब को बताया। १८ लोग इस कारण भी यीशु से मिलने आए क्योंकि उन्होंने सुना था कि यीशु ने यह अद्‌भुत चिन्ह दिखाया है। १९ फरीसी आपस में कहने लगे, "देखा, हमें कोई सफलता नहीं मिली! पूरा संसार इसके पीछे हो लिया है।"

कुछ यूनानी यीशु से मिलने आए

२० त्योहार की आराधना के लिए बहुत से लोग यरूशलेम आए थे। उनमें कुछ यूनानी भी थे। २१ वे फिलिप्पुस के पास गए। फिलिप्पुस गलील प्रान्त के बैतसैदा नगर का रहने वाला था। यूनानियों ने उस से कहा,

"महाशय, हम यीशु से मिलना चाहते हैं।" २२ फिलिप्पुस ने जाकर अन्द्रियास से कहा। अन्द्रियास तथा फिलिप्पुस ने यीशु को बताया। २३ यीशु ने उन्हें उत्तर दिया "वह समय आ गया है जिसमें मानव-पुत्र की महिमा होगी। २४ मैं तुमसे सच कहता हूं, गेहूं का दाना मिट्टी में गिरकर जब तक मर नहीं जाता वह अकेला रहता है। पर जब वह मर जाता है, तब बहुत फल लाता है। २५ जो व्यक्ति अपने जीवन से प्रेम करता है वह उसे खोता है। जो व्यक्ति इस संसार में अपने जीवन से घृणा करता है वह उसे अनन्त जीवन तक सम्भाले रहेगा। २६ यदि कोई व्यक्ति मेरी सेवा करना चाहे तो वह मेरे पीछे हो ले। जहां मैं हूं, वहां मेरा सेवक भी रहेगा। यदि कोई व्यक्ति मेरी सेवा करता है तो मेरा पिता उसका आदर करेगा।

मानव-पुत्र सलीब पर उठाया जाएगा

२७ "अब मेरा मन व्याकुल है। मैं क्या कहूं? यह कि पिता मुझे इस घड़ी से बचा? नहीं, मैं इसी घड़ी के लिये संसार में आया हूं। २८ हे पिता, अपने नाम की महिमा कर।" तब आकाश से एक आवाज आई—"मैंने इसकी महिमा की है और इसकी महिमा फिर करूंगा।" २९ यह सुनकर वहाँ खड़े कुछ लोगों ने कहा, "बादल गरजा है।" अन्य लोगों ने कहा, "कोई स्वर्गदूत उनसे बोला।" ३० यीशु ने कहा, "यह आवाज मेरे लिए नहीं पर तुम्हारे लिए आई है। ३१ अब इस संसार का न्याय किया जाएगा। अब इस संसार का शासक बाहर निकाला जाएगा। ३२ यदि मैं इस पृथ्वी पर से उठाया गया तो सब मनुष्यों को अपनी ओर खींच लूंगा।" (३३ ऐसा कहकर उन्होंने संकेत दिया कि वह किस प्रकार की मृत्यु से मरेंगे।) ३४ इस पर लोगों ने उनसे कहा, "हमने धर्म-नियम से यह सुना है कि मसीह अनन्त काल तक रहेगा। आप यह कैसे कहते हैं कि मानव-पुत्र का ऊपर उठाया जाना आवश्यक है? यह मानव-पुत्र कौन है?" ३५ यीशु ने उनसे कहा, "तुम्हारे बीच में ज्योति अब थोड़े और समय के लिए है। जब तक तुम्हारे पास ज्योति है, चलते आओ। ऐसा न हो कि अंधकार तुम्हें आ घेरे। जो व्यक्ति अंधकार में चलता है वह नहीं जानता कि वह कहाँ जा रहा है। ३६ जब तक तुम्हारे पास ज्योति है, तुम ज्योति पर विश्वास करो ताकि तुम ज्योति की सन्तान बन जाओ।

यहूदियों ने विश्वास नहीं किया

ये बातें कहकर यीशु वहां से चले गए। उन्होंने स्वयं को यहूदियों से छिपा रखा। ३७ यद्यपि यीशु ने उनकी आंखों के सामने अनेक अद्‌भुत चिन्ह दिखाए थे तौभी उन्होंने यीशु पर विश्वास नहीं किया। ३८ इस प्रकार नबी यशायाह के ये वचन पूरे हुए—'प्रभु, किसने हमारी बातों पर विश्वास किया? और प्रभु का बाहुबल किस पर प्रकट हुआ?' ३९ इस कारण वे विश्वास न कर सके। यशायाह ने यह भी कहा है :—

४० परमेश्वर ने उनकी आंखें अंधी कर दी हैं,
उनकी बुद्धि जड़ कर दी है
ताकि वे अपनी आंखों से न देख सकें,
न बुद्धि से समझ सकें
और न मेरी ओर लौटें कि मैं उन्हें स्वस्थ करूं।'

४१ यशायाह ने प्रभु की महिमा देखी इसलिए उसने उसके विषय यह बताया। ४२ इस कारण यहूदियों के कई अधिकारियों ने यीशु पर विश्वास किया। पर फरीसियों के कारण उन्होंने खुले रूप में यीशु को स्वीकार नहीं किया। उन्हें डर था कि फरीसी उन्हें सभागृह की सदस्यता से निकाल देंगे। ४३ उन्हें परमेश्वर से महिमा प्राप्त करने की अपेक्षा मनुष्यों से प्रशंसा प्राप्त करना अधिक प्रिय लगा।

यीशु के शब्दों द्वारा न्याय होगा

४४ यीशु ने ऊंची आवाज में कहा, "मुझ पर विश्वास करने वाला व्यक्ति मुझ पर ही विश्वास नहीं करता पर उस पर भी जिसने मुझे भेजा है। ४५ जो व्यक्ति मुझे देखता है वह मेरे भेजने वाले को देखता है। ४६ मैं एक ज्योति के समान इस संसार में आया हूं ताकि जो व्यक्ति मुझ पर विश्वास करे वह अंधकार में न रहे। ४७ यदि कोई व्यक्ति मेरा सन्देश सुनकर उसके

अनुसार नहीं चलता तो मैं उसे दोषी नहीं ठहराता। मैं संसार को दोषी ठहराने नहीं आया, पर ससार का उद्धार करने आया हूं। ४८ जो व्यक्ति मेरा तिरस्कार करता है और मेरा सन्देश स्वीकार नहीं करता उसे दोषी ठहराने वाला कोई और है। जो वचन मैंने कहा है वह उस व्यक्ति को अंतिम दिन में दोषी ठहराएगा। ४९ मैंने अपनी ओर से कुछ नहीं कहा। पर मेरे पिता ने जिसने मुझे भेजा है, मुझे आदेश दिया है कि मैं क्या कहूं और क्या बोलूं। ५० मैं जानता हूं कि उसके आदेश में अनन्त जीवन है। अतः मैं जो बातें कहता हूं वे वही हैं जैसा पिता ने मुझे बोलने के लिये कहा।"

यीशु अपने शिष्यों क पैर धोते हैं

१३ फसह के त्योहार के पहले की बात है। यीशु ने यह जान लिया कि उनके लिये उचित समय आ गया है जब वह संसार छोड़कर पिता के पास जाएं। उन्होंने इस संसार में उनके अपनों से प्रेम किया और अन्त तक उनसे प्रेम किया।

२ वे सब रात्रि के भोजन के लिये बैठे। शैतान ने शमौन के पुत्र यहूदा इस्कारियोति के हृदय में यह बात डाल दी थी कि वह यीशु को गिरफ्तार करवाए। ३ यीशु को यह मालूम था कि पिता ने उनके हाथ में सब कुछ सौंप दिया है। उन्हें यह भी मालूम था कि वह परमेश्वर से आए हैं और परमेश्वर के पास जा रहे हैं। ४ वह भोजन से उठे। उन्होंने अपने बाहरी कपड़े उतारे और अपनी कमर पर एक अंगोछा बांध लिया। ५ उन्होंने एक बर्तन में पानी लिया। उन्होंने शिष्यों के पैर धोना शुरू किया। जो अंगोछा उनकी कमर पर बंधा था उससे वह शिष्यों के पैर पोंछते जाते थे। ६ इस तरह वह शमौन पतरस के पास आए। पतरस ने उनसे कहा, "प्रभु आप मेरे पैर धोते हैं?" ७ यीशु ने उसे उत्तर दिया, "मैं जो कर रहा हूं उसे तू अभी नहीं जानता। पर तू बाद में समझ लेगा।" ८ पतरस ने उनसे कहा, "मैं आपको अपने पैर कभी नहीं धोने दूंगा।" यीशु ने उसे उत्तर दिया, "यदि मैं तेरे पैर न धोऊं तो तेरा मुझसे कोई सम्बन्ध नहीं।" ९ शमौन पतरस ने उनसे कहा, "प्रभु

न सिर्फ मेरे पैर, पर मेरे हाथ और मेरा सिर भी धोइए।" १० यीशु ने उससे कहा, "जो नहा चुका है उसे पैर के सिवाय और कुछ धोने की आवश्यकता नहीं। वह पूर्णतः शुद्ध है। तुम शुद्ध हो, पर सबके सब नहीं।" ११ यीशु जानते थे कि उन्हें कौन गिरफ्तार करवाएगा, इसलिए उन्होंने कहा कि तुम सब शुद्ध नहीं हो।

१२ .जब यीशु ने उनके पैर धो लिए तब उन्होंने अपने बाहरी कपड़े पहन लिए। वह भोज पर फिर बैठ गए। उन्होंने शिष्यों से कहा "क्या तुम्हारी समझ में आया कि मैंने तुम्हारे साथ क्या किया? १३ तुम मुझे गुरू और प्रभु कहते हो। तुम यह ठीक कहते हो क्योंकि मैं हूं। १४ यदि मैंने गुरू और प्रभु होते हुए भी तुम्हारे पैर धोए तो तुम्हें भी एक दूसरे के पैर धोना चाहिए। १५ मैंने तुम्हें एक उदाहरण दिया कि तुम भी वैसा ही करो जैसा मैंने तुम्हारे लिये किया। १६ मैं तुमसे सच कहता हूं कि एक गुलाम अपने मालिक से बड़ा नहीं होता और न भेजा गया व्यक्ति, उसे भेजने वाले से बड़ा होता है। १७ यह जानते हुए यदि तुम ऐसा ही करो तो तुम धन्य हो।

१८ "मैं तुम सबके विषय नहीं बोल रहा हूं। मैं जानता हूं कि मैंने किस किसको चुना है। पर शास्त्र का यह वचन पूरा हो—'मेरे साथ भोजन

करने वाले व्यक्ति ने मुझ पर लात उठाई है।' १९ यह घटना होने के पहले में तुमसे कहता हूं ताकि जब यह घटना हो चुके तव तुम विश्वास करो कि मैं वही हूं। २० मैं तुमसे सच कहता हूं--यदि कोई व्यक्ति उसे स्वीकार करे जिसे मैं भेजता हूं तो वह मुझे स्वीकार करता है और जो व्यक्ति मुझे स्वीकार करता है वह उसे स्वीकार करता है जिसने मुझे भेजा है।"

यीशु का विश्वासघाती कौन ?

२१ यह कहने के बाद यीशु का मन व्याकुल हो उठा। उन्होंने साफ-साफ कहा, "में तुमसे सच कहता हूं कि तुममें से एक मुझे गिरफ्तार करवाएगा।"
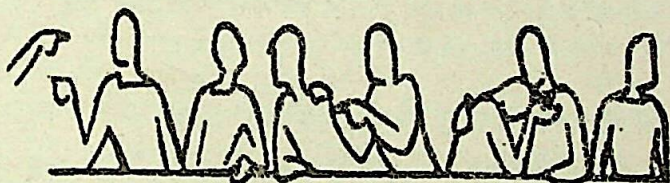
२२ शिष्य हैरान होकर एक दूसरे को देखने लगे कि यीशु किसके विषय कह रहे हैं। २३ यीशु उनमें से एक शिष्य से बहुत प्रेम करते थे। वह शिष्य उनकी वगल में बैठा था। २४ शमौन पतरस ने इशारा करके उससे कहा, "उनसे पूछ कि वह कौन है जिसके विषय वे कह रहे हैं।" २५ उस शिष्य ने यीशु की छाती की ओर झुककर उनसे पूछा, "प्रभु वह कौन है ?" २६ यीशु ने उसे उत्तर दिया, "जिसे मैं यह रोटी का टुकड़ा डुवो कर दूंगा, वही है।" यीशु ने रोटी का टुकड़ा डुबोया और उसे इस्कारियोत गांव के शमौन के पुत्र यहूदा को दिया। २७ जव यहूदा ने रोटी का टुकड़ा लिया तव उसमें शैतान समा गया। यीशु ने उससे कहा, "तुझे जो करना है वह जल्दी कर।" २८ भोजन पर बैठे लोगों में से किसी ने नहीं समझा कि उन्होंने उसे क्या कार्य करने के लिये कहा। २९ यहूदा खजाने की थैली रखता था। अतः कुछ ने सोचा कि यीशु ने उससे कहा-'त्योहार के लिये जिन चीजों की हमें आवश्यकता है वह खरीद ले, या गरीवों को दान दे।' ३० अतः यहूदा रोटी का टुकड़ा लेकर उसी क्षण वाहर चला गया। वह रात का समय था।

नई आज्ञा

३१ जब यहूदा बाहर चला गया तब यीशु ने कहा, "अब मानव-पुत्र की महिमा हुई है, और उसके द्वारा परमेश्वर की महिमा प्रकट हुई है। ३२ यदि मानव-पुत्र में परमेश्वर की महिमा प्रकट हुई तो परमेश्वर भी अपने आप में उसकी महिमा करेगा और तुरंत उसकी महिमा करेगा। ३३ मेरे बालको, मैं कुछ देर और तुम्हारे साथ हूं। तुम मुझे ढूंढ़ोगे। जैसा मैंने यहूदियों से कहा वैसा अब तुमसे कहता हूं, जहां मैं जा रहा हूं वहां तुम नहीं जा सकते। ३४ मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूं, एक दूसरे से प्रेम रखो। जैसा मैंने तुमसे प्रेम किया वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम करो। ३५ यदि तुममें एक दूसरे के प्रति प्रेम है तो सब लोग जानेंगे कि तुम मेरे शिष्य हो।

यीशु भविष्वाणी करते है : पतरस उनका इन्कार करेगा

३६ शमौन पतरस ने यीशु से कहा, "प्रभु आप कहां जा रहे हैं?" यीशु ने उत्तर दिया, "जहां मैं जा रहा हूं वहां तुम अभी मेरे पीछे नहीं आ सकते। पर बाद में तुम मेरा अनुसरण करोगे।" ३७ पतरस ने कहा, "प्रभु मैं अभी आप के पीछे क्यों नहीं जा सकता? मैं आपके लिये अपनी जान भी दे दूंगा।" ३८ यीशु ने उत्तर दिया, "क्या तू सचमुच मेरे लिये अपनी जान देगा! मैं तुझसे सच कहता हूं, इसके पहले कि मुर्गा बांग दे तू तीन बार इन्कार करेगा कि तू मुझे जानता है।"

यीशु ही पिता तक पहुंचने का मार्ग है

१४ यीशु ने कहा, "तुम घबराओ मत। परमेश्वर पर विश्वास रखो और मुझ पर भी विश्वास रखो। २ मेरे पिता के घर में रहने के लिये बहुत स्थान हैं। यदि ऐसा न होता तो क्या मैं तुमसे कहता कि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जा रहा हूं? ३ यदि मैं जाऊं और तुम्हारे लिये जगह तैयार कर लूं तो मैं फिर आऊंगा। मैं तुम्हें अपने साथ ले जाऊंगा ताकि जहां मै हूं वहां तुम भी रहो। ४ मैं जहां जा रहा हूं वहां का मार्ग तुम्हें मालूम

है।" ५ थोमा ने उनसे कहा, "प्रभु हम नहीं जानते कि आप कहां जा रहे हैं तो हमें वहां का मार्ग कैसे मालूम होगा ?" ६ यीशु ने उससे कहा, "मार्ग मैं हूं। मैं सत्य हूं, मैं जीवन हूं। यदि कोई मेरे द्वारा नहीं जाता तो वह पिता के पास नहीं पहुंच सकता। ७ यदि तुम मुझे जानते तो मेरे पिता को भी जान लेते। अब तुम उसे जानते हो और तुमने उसे देखा भी है।" ८ फिलिप्पुस न कहा, "प्रभु, हमें पिता के दर्शन करा दीजिए। यह हमारे लिये पर्याप्त होगा।" ९ यीशु ने उससे कहा, "फिलिप्पुस मैं इतने समय से तुम्हारे साथ हूं फिर भी तू मुझे नहीं जानता ? जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देख लिया। तू क्यों कहता है हमें पिता के दर्शन कराइए ? १० क्या तू विश्वास नहीं करता कि मैं पिता में हूं और पिता मुझ में है ? जो वचन मैं कहता हूं वह मैं अपनी ओर से नहीं कहता। पर पिता मुझमें रहकर अपने कार्य करता है। ११ तुम मेरा विश्वास करो कि मैं पिता में हूं और पिता मुझमें है। या फिर इन कार्यों के कारण विश्वास करो। १२ मैं तुमसे सच कहता हूं कि मुझ पर विश्वास करने वाला व्यक्ति वे कार्य करेगा जो मैं करता हूं। वह इनसे भी महान कार्य करेगा क्योंकि मैं पिता के पास जा रहा हूं। १३ तुम मेरे नाम से जो कुछ मांगो मैं वह करूंगा जिससे पिता की महिमा पुत्र के द्वारा हो। १४ यदि तुम मेरे नाम से मुझसे कुछ मांगो तो वह मैं करूंगा।

पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा

१५ "यदि तुम मुझसे प्रेम करते हो तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे। १६ मैं पिता से निवेदन करूंगा और वह तुम्हें दूसरा सहायक देगा। वह सहायक तुम्हारे साथ हमेशा रहेगा। १७ वह है सत्य का आत्मा। संसार उसे ग्रहण नहीं कर सकता क्योंकि संसार न तो उसे देखता है और न उसे जानता है। तुम उसे जानते हो क्योंकि वह तुम्हारे साथ है और तुममें निवास करता है।

१८ "मैं तुम्हें अनाथ नहीं छोड़ूंगा। मैं तुम्हारे पास फिर आ रहा हूं। १९ थोड़ी देर के बाद संसार मुझे नहीं देखेगा। पर तुम मुझे देखोगे, क्योंकि मैं जीवित हूं और तुम भी जीवित रहोगे। २० उस दिन तुम यह जान लोगे कि मैं अपने पिता में हूं और तुम मुझमें हो और मैं तुममें हूं।

२१ "जो व्यक्ति मेरी आज्ञाओं को स्वीकार करता है और उनका पालन करता है वही मुझसे प्रेम करता है। जो व्यक्ति मुझसे प्रेम करता है उससे मेरा पिता प्रेम करेगा और मैं उससे प्रेम करूंगा। मैं उसे दर्शन दूंगा।" २२ उस यहूदा ने, जो इस्कारियोती नहीं था, कहा, "प्रभु ऐसा क्यों, आप हमें ही दर्शन देंगे, संसार को नहीं?" २३ यीशु ने उसे उत्तर दिया, "यदि कोई मुझसे प्रेम करता है तो वह मेरे संदेश का पालन करेगा। मेरा पिता उससे प्रेम करेगा। हम उसके पास आएंगे और उसके साथ निवास करेंगे। २४ जो व्यक्ति मुझसे प्रेम नहीं करता है वह मेरे संदेश का पालन नहीं करता। जो सन्देश तुम सुनते हो वह मेरा नहीं है। यह सन्देश पिता का है जिसने मुझे भेजा है। २५ मैंने तुम्हारे साथ रहते हुए ये बातें कही हैं। २६ पिता मेरे नाम से तुम्हें पवित्र आत्मा देगा। वह सहायक तुम्हें सब बातों की शिक्षा देगा। वह सहायक तुम्हें वह सब स्मरण कराएगा जो मैंने तुमसे कहा है।

२७ "मैं तुम्हें शान्ति दे कर जा रहा हूं। मैं तुम्हें अपनी ही शांति दे रहा हूं। मैं तुम्हें इस तरह दे रहा हूं जैसे संसार नहीं दे सकता। न घबराओ और न भयभीत होओ। २८ तुमने सुना कि मैंने तुमसे कहा, मैं जा रहा हूं और तुम्हारे पास फिर आऊंगा। यदि तुम मुझसे प्रेम करते तो तुम खुश होते कि मैं पिता के पास जा रहा हूं क्योंकि पिता मुझसे महान है। २९ अभी यह होने के पहले ही मैंने तुम्हें बता दिया है ताकि जब यह हो तो तुम विश्वास करो। ३० अब मैं तुमसे और अधिक समय तक नहीं बोलूंगा क्योंकि इस संसार का शासक आ रहा है। उसका मुझ पर कोई अधिकार नहीं है। ३१ यह इसलिए हो रहा है कि संसार जान ले कि मैं पिता से प्रेम करता हूं और जो पिता ने मुझे आज्ञा दी है मैं वही करता हूं। उठो, हम यहां से चलें।"

यीशु असली दाखलता

१५ "असली दाखलता मैं हूं। मेरा पिता किसान है। २ वह मेरी उस डाली को काट देता है जिसमें फल नहीं लगते। वह प्रत्येक डाली को जिसमें फल लगते हैं, छांटकर साफ करता है ताकि उसमें और फल लगें। ३ जो सन्देश मैंने तुमसे कहा है उसके कारण तुम शुद्ध हो। ४ तुम मुझमें

रहो और मैं तुममें। जब एक डाली दाखलता से अलग है तो उसमें अपने आप फल नहीं लगते। उसी प्रकार यदि तुम मुझमें न रहो तो तुम भी कुछ फल नहीं ला सकते। ५ मैं दाखलता हूं, तुम डालियां हो। वह व्यक्ति बहुत फल लाता है जो मुझमें रहता है और मैं जिसमें। मुझसे अलग रहकर तुम कुछ नहीं कर सकते। ६ जो व्यक्ति मुझमें नहीं रहता वह डाली के समान बाहर फेंक दिया जाता है। ऐसी डालियां सूख जाती हैं और लोग उनको उठाकर आग में डाल देते हैं और वे भस्म हो जाती हैं। ७ यदि तुम मुझमें रहते हो और मेरा सन्देश तुममें रहता है तो तुम्हारी जो इच्छा हो मांगो और वह तुम्हारे लिए हो जाएगा। ८ यदि तुम बहुत फल लाओ तो इससे पिता की महिमा होगी और तुम मेरे शिष्य ठहरोगे। ९ जैसे पिता ने मुझसे प्रेम रखा वैसा ही मैंने तुमसे प्रेम रखा। मेरे प्रेम में रहो। १० यदि तुम मेरी आज्ञाओं का पालन करोगे तो मेरे प्रेम में रहोगे, जिस तरह मैंने अपने पिता की आज्ञाओं का पालन किया है और उसके प्रेम में रहता हूं।

११ "मैंने तुम्हें ये बातें बता दी हैं कि मेरा आनंद तुममें हो और तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए। १२ मेरी आज्ञा यह है : जैसे मैंने तुमसे प्रेम किया वैसे तुम भी एक दूसरे से प्रेम करो। १३ इससे बढ़कर किसी का प्रेम नहीं कि एक व्यक्ति अपने मित्रों के लिये अपना प्राण दे। १४ जैसा आदेश म देता हूं यदि तुम वैसा ही करो तो तुम मेरे मित्र हो। १५ अब मैं तुम्हें अपना दास नहीं कहूंगा। एक दास यह नहीं जानता कि उसका स्वामी क्या कर रहा है। पर मैंने तुम्हें मित्र कहा है क्योंकि मैंने तुम्हें वे सब बातें बता दी हैं जो मैंने पिता से सुनीं। १६ तुमने मुझे नहीं चुना परन्तु मैंने तुम्हें चुना है। मैंने तुम्हें नियुक्त किया कि तुम जाओ और बहुत फल लाओ। तुम्हारे ये फल सदा रहने वाले हों। मेरे नाम से तुम जो कुछ पिता से मांगो वह तुम्हें देगा। १७ मैं तुम्हें यह आदेश देता हूं : एक दूसरे से प्रेम करो।

संसार से घृणा

१८ "यदि संसार तुमसे घृणा करे तो यह जान लो कि इसने पहले मझसे घृणा की है। १९ यदि तुम संसार के होते तो संसार तुम्हें अपनों जैसा

प्रेम करता। मैंने तुम्हें इस संसार में से चुना है। तुम इस संसार के नहीं हो इसलिए संसार तुमसे घृणा करता है। २० मेरा वचन स्मरण करो जो मैंने तुमसे कहा था : एक दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं होता। यदि उन्होंने मुझे सताया है तो वे तुम्हें भी सताएंगे। यदि उन्होंने मेरा सन्देश माना होता तो वे तुम्हारा भी सन्देश मानेंगे। २१ मेरे नाम के कारण वे तुम्हारे साथ यह सब कुछ करेंगे क्योंकि वे उसे नहीं जानते जिसने मुझे भेजा है। २२ यदि मैं आकर उनसे बातें न करता तो उन पर पाप न लगता। पर अब उन्हें पाप के लिये कोई बहाना नहीं रहा। २३ मुझसे घृणा करने वाला मेरे पिता से घृणा करता है। २४ यदि मैं वे कार्य नहीं करता जो किसी अन्य मनुष्य ने नहीं किए तो उन पर पाप न लगता। पर अब उन्होंने देख लिया फिर भी उन्होंने मुझसे और मेरे पिता से घृणा की है। २५ इस तरह उनके धर्म-नियम में लिखा यह वचन पूरा होगा, 'उन्होंने बिना कारण मुझसे घृणा की।'

२६ "पिता की ओर से मैं तुम्हारे पास एक सहायक भेजूंगा, सत्य का आत्मा, जिसका उद्गम पिता से है। जब वह सहायक आ जाएगा तब वह मेरे विषय गवाही देगा २७ और तुम भी मेरे विषय गवाही दोगे क्योंकि तुम आरम्भ से मेरे साथ हो।

१६ "मैंने यह सब तुम्हें इसलिये बताया है कि तुम्हारा विश्वास जाता न रहे। २ वे तुम्हें सभागृह की सदस्यता से निकाल देंगे। वह समय आएगा जब तुम्हारी हत्या करने वाला व्यक्ति यह सोचेगा कि ऐसा करके वह परमेश्वर की सेवा कर रहा है। ३ वे यह सब इसलिए करेंगे क्योंकि उन्होंने न पिता को जाना है और न मुझे। ४ मैंने ये बातें तुम्हें इसलिए बताईं कि जब इन घटनाओं का समय आए तो तुम स्मरण करो कि मैंने तुमसे यह सब कहा था।

पवित्र आत्मा का कार्य

"मैंने आरंभ में तुम्हें ये बातें नहीं बताईं क्योंकि मैं तुम्हारे साथ था। ५ पर अब मैं उसके पास जा रहा हूं जिसने मुझे भेजा है। तुममें से कोई यह नहीं पूछता, 'आप कहां जा रहे हैं?' ६ तुम्हारा हृदय दुख से भर गया है, क्योंकि मैंने ये बातें तुम्हें बता दीं। ७ मैं तुम्हें सच्चाई बताता हूं—यह तुम्हारे लिए लाभदायक है कि मैं तुम्हें छोड़कर जा रहा हूं। यदि मैं न जाऊं तो वह सहायक तुम्हारे पास नहीं आएगा। पर यदि मैं जाऊं तो उसे तुम्हारे पास भेज दूंगा। ८ जब वह आ जाएगा तो वह संसार को पाप, धार्मिकता और न्याय के विषय दोषी ठहराएगा। ९ पाप के विषय इसलिए कि इस संसार के लोगों ने मुझ पर विश्वास नहीं किया। १० धार्मिकता के विषय इसलिए कि मैं पिता के पास जा रहा हूं और तुम मुझे फिर न देखोगे। ११ न्याय के विषय इसलिए कि इस संसार का शासक दोषी ठहराया गया है।

१२ "मुझे तुमसे और भी बहुत बातें कहनी हैं, पर अभी तुम उन्हें सहन नहीं कर सकते। १३ जब वह, सत्य का आत्मा, आएगा तब वह सम्पूर्ण सत्य में तुम्हारा मार्ग दर्शन करेगा। वह अपनी ओर से कुछ नहीं कहेगा। जो बातें वह सुनेगा वही कहेगा। वह होने वाली घटनाओं के विषय तुम्हें

बताएगा । १४ वह मेरी महिमा करेगा क्योंकि वह मेरी बातें ग्रहण करेगा और तुम्हें बताएगा । १५ जो पिता का है वह मेरा है, इसलिए मैंने कहा कि आत्मा मेरी बातें ग्रहण करेगा और तुम्हें बताएगा ।

दुख आनद में बदल जाएगा

१६ "थोड़ी देर के बाद तुम मुझे नहीं देखोगे । फिर थोड़ी देर के बाद मुझे देखोगे" । १७ उनके कुछ शिष्य आपस में कहने लगे, "वह हमसे यह क्या कह रहे हैं ? 'थोड़ी देर के बाद तुम मुझे नहीं देखोगे । फिर थोड़ी देर के बाद तुम मुझे देखोगे ।' और 'मैं पिता के पास जा रहा हूं ।'" १८ उन्होंने कहा, "यह 'थोड़ी देर' क्या है जिसके विषय वह कह रहे हैं । हम नहीं जानते कि वह क्या कह रहे हैं ।" १९ यीशु यह जान गए कि वे उनसे कुछ पूछना चाह रहे हैं । उन्होंने शिष्यों से कहा, "मैंने कहा—'थोड़ी देर के बाद तुम मुझे नहीं देखोगे । फिर थोड़ी देर के बाद तुम मुझे देखोगे ।' क्या तुम आपस में इस पर पूछताछ कर रहे हो ? २० मैं तुमसे सच कहता हूं कि तुम रोओगे और शोक मनाओगे । पर संसार आनन्द मनाएगा । तुम शोकित होगे पर तुम्हारा शोक आनन्द में बदल जाएगा । २१ जब एक स्त्री बच्चे को जन्म देती है तो उसे पीड़ा होती है क्योंकि उसका प्रसव-काल आ गया । जब शिशु का जन्म हो जाता है तब वह एक मनुष्य के इस संसार में उत्पन्न होने की खुशी में अपनी पीड़ा भूल जाती है । २२ उसी प्रकार अभी तुम्हें दुख हो रहा है । मैं तुमसे फिर मिलूंगा और तुम्हारा हृदय आनन्द से भर जाएगा । कोई व्यक्ति तुम्हारा आनन्द तुमसे नहीं छीन सकेगा ।

२३ "जब वह दिन आएगा तब तुम मुझसे कुछ नहीं पूछोगे । मैं तुमसे सच कहता हूं कि यदि तुम पिता से मेरे नाम से कुछ मांगो तो वह तुम्हें देगा । २४ आज तक तुमने मेरे नाम से कुछ नहीं मागा । मांगो, और तुम प्राप्त करोगे जिससे तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाएगा ।

मैंने ससार पर विजय प्राप्त कर ली है

२५ मैंने तुम्हें कथाओं के माध्यम से ये बातें बताई हैं । वह समय आ रहा है जब मैं तुम्हें कथाओं के माध्यम से नहीं बताऊंगा । पर पिता के

विषय तुम्हें साफ-साफ बताऊंगा। २६ उस दिन तुम मेरे नाम से मांगोगे। मैं नहीं कहता कि तुम्हारे लिए मैं पिता से निवेदन करूंगा। २७ पिता स्वयं तुमसे प्रेम करता है क्योंकि तुमने मुझसे प्रेम किया है और यह विश्वास किया है कि मैं परमेश्वर की ओर से आया हूं। २८ मैं पिता में से निकला हूं और इस संसार में आया हूं। मैं संसार छोड़कर फिर पिता के पास जा रहा हूं।"

२९ उनके शिष्यों ने कहा, "अब आप किसी कथा के माध्यम से नहीं पर साफ-साफ कह रहे हैं। ३० अब हम जानते हैं कि आप सर्वज्ञानी हैं। यह आवश्यक नहीं कि कोई आपसे प्रश्न पूछे। इसके कारण हम विश्वास करते हैं कि आप परमेश्वर से निकले हैं।" ३१ यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "क्या अब तुम विश्वास करते हो? ३२ वह समय आ रहा है बल्कि आ गया है जब तुम लोग तितर-बितर किए जाओगे। प्रत्येक अपने-अपने घर चला जाएगा। तुम मुझे अकेला छोड़ दोगे। मैं अकेला नहीं हूं क्योंकि पिता मेरे साथ है। ३३ मैंने तुम्हें ये बातें इसलिए बताईं कि तुम मुझमें शान्ति पाओ। संसार में तुम्हें कष्ट मिलेगा। हिम्मत बांधो, मैंने संसार पर विजय प्राप्त की है।"

अपने शिष्यों के लिये यीशु की प्रार्थना

१७ ये बातें कहने के बाद यीशु ने आंखे उठाकर स्वर्ग की ओर देखा और कहा, "हे पिता, उचित समय आ गया है, अपने पुत्र की महिमा कर
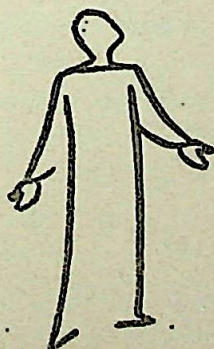
जिससे पुत्र भी तेरी महिमा कर सके। २ तूने उसे सब मनुष्यों पर अधिकार दिया है कि वह उन सब को अनन्त जीवन दे जिन्हें तूने उसे दिया है। ३ अनन्त जीवन यह है कि वे तुझ एक मात्र सच्चे परमेश्वर को जानें और यीशु मसीह को जानें जिसे तूने भेजा है। ४ जो कार्य तूने मुझे करने के लिये दिया था वह मैंने पूरा कर लिया है। इस तरह मैंने पृथ्वी पर तेरी महिमा की। ५ अब हे पिता अपने सम्मुख मेरी महिमा कर। मुझे वह महिमा दे जो संसार की सृष्टि के पहले तेरे साथ रहते मेरी थी।

६ "संसार में से जो व्यक्ति तूने मुझे दिए थे उन पर मैंने तेरा नाम प्रकट किया। ये लोग तेरे थे। तूने इन्हें मुझे दिया। इन्होंने तेरे सन्देश का पालन किया है। ७ अब ये जानते हैं कि वह सब जो तूने मुझे दिया, तेरी ओर से है। ८ जो सन्देश तूने मुझे दिया था वह मैंने इन्हें दिया। इन्होंने उसे ग्रहण किया। ये जानते हैं कि यह सत्य है कि मैं तुझ से निकलकर आया हूं। ये विश्वास करते हैं कि तूने मुझे भेजा है।

९ "मैं इनके लिये तुझसे विनती कर रहा हूं। मैं संसार के लिये विनती नहीं कर रहा हूं पर इनके लिए जिन्हें तूने मुझे दिया है क्योंकि ये तेरे हैं। १० मेरा सब कुछ तेरा है और जो तेरा है वह मेरा है। इनके द्वारा मेरी महिमा हुई है। ११ अब मैं संसार में नहीं रहूंगा पर ये लोग संसार में रहेंगे। मैं तेरे पास आ रहा हूं। पवित्र पिता, जो नाम तूने मुझे दिया है, उसकी सामर्थ के द्वारा इन्हें सुरक्षित रख कि ये एक हों जैसे हम एक हैं। १२ जब मैं इनके साथ था तब जो नाम तू ने मुझे दिया था उसकी सामर्थ के द्वारा मैंने इन्हें सुरक्षित रखा। मैंने इनकी रक्षा की और जिस व्यक्ति को नाश होना था, उसे छोड़कर कोई भी नष्ट नहीं हुआ ताकि शास्त्र का वचन पूरा हो। १३ अब मैं तेरे पास आ रहा हूं। मैं संसार में ये बातें इसलिए कह रहा हूं कि ये मेरे आनंद का पूर्ण अनुभव करें। १४ मैंने इन्हें तेरा सन्देश दिया है। जिस प्रकार मैं संसार का नहीं उसी प्रकार ये भी संसार के नहीं। इस कारण संसार ने इनसे घृणा की। १५ मैं यह विनती नहीं करता कि तू इन्हें संसार से निकाल ले पर यह कि बुराई से इन्हें सुरक्षित रख। १६ जिस प्रकार मैं संसार का नहीं उसी प्रकार ये भी संसार के नहीं हैं। १७ सत्य के

द्वारा इन्हें अपना ले । तेरा सन्देश सत्य है । १८ जैसे तूने मुझे संसार में भेजा है वैसे ही मैंने इन्हें संसार में भेजा । १९ इनके लिये मैं अपने आपको समर्पित करता हूं कि ये भी सत्य के द्वारा तेरे हो जाएं ।

२० "मैं सिर्फ इनके लिये ही विनती नहीं करता । मैं उनके लिये भी विनती करता हूं जो इनके सन्देश के द्वारा मुझ पर विश्वास करते हैं । २१ मैं विनती करता हूं कि सब एक हो जाएं । हे पिता जैसे तू मुझमें है और मैं तुझमें हूं उसी प्रकार वे भी हममें हों । संसार यह विश्वास करे कि तूने मुझे भेजा है । २२ जो महिमा तूने मुझे दी है वह महिमा मैंने उन्हें दी है कि वे एक हों जैसे हम एक हैं, २३ मैं उनमें और तू मुझमें जिससे वे पूर्णतया एक हो जाएं । इससे संसार जान ले कि तू ने मुझे भेजा है और यह कि जैसा तून मझसे प्रेम किया वैसा उनसे भी प्रेम किया ।

२४ "हे पिता मैं चाहता हूं कि जहां मैं हूं वहां वे भी मेरे साथ रहें, जिन्हें तू ने मुझे दिया है । वे मेरी महिमा देख सकें जो तू ने मुझे दी है क्योंकि संसार की सृष्टि के पहले ही तू ने मुझसे प्रेम किया है । २५ हे धार्मिक पिता, सचमुच संसार ने तुझे नहीं जाना । मैंने तुझे जाना और इन्होंने जाना कि तू ने मुझे भेजा है । २६ मैंने तेरे नाम का ज्ञान इन्हें दिया और देता रहूंगा ताकि वह प्रेम जो तू ने मुझे दिया इनमें हो और मैं इनमें ।

यीशु की गिरफ्तारी

१८ यीशु प्रार्थना करने के बाद अपने शिष्यों के साथ किद्रोन नाले के उस पार गए । वहां एक बगीचा था । यीशु और उनके शिष्य उस बगीचे के अन्दर गए । २ यहूदा भी, जो यीशु को पकडवाने वाला था, उस स्थान को जानता था क्योंकि यीशु अपने शिष्यों के साथ अक्सर वहां जाया करते थे । ३ यहूदा सैनिकों का एक दल और महापुरोहितों तथा फरीसियों की ओर से भेजे गए सिपाहियों को लेकर यहां गया । उनके हाथ में लालटेनें, मशालें और शस्त्र थे । ४ यीशु यह जानते थे कि उन पर क्या बीतने वाला है । वह सामने आए और उन्होंने लोगों से पूछा. "तुम किसे खोज रहे

हो ?" ५ उन्होंने उत्तर दिया, "नासरत नगर के यीशु को।" यीशु ने उनसे कहा, "वह मैं हूं।" यीशु को पकड़वाने वाला यहूदा भी उनके साथ खड़ा था। ६ जब यीशु ने उनसे कहा, "वह मैं हूं" तब वे पीछे हटे और जमीन
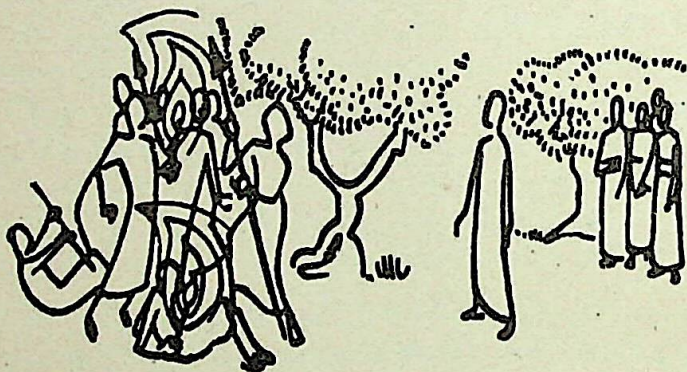
पर गिर पड़े। ७ यीशु ने उनसे फिर पूछा, "तुम किसे खोज रहे हो ?" उन्होंने कहा, "नासरत नगर के यीशु को।" ८ यीशु ने कहा, "मैंने तुमसे कहा कि वह मैं हूं। यदि तुम मुझे खोज रहे हो तो मेरे शिष्यों को जाने दो।" ९ उन्होंने यह इसलिए कहा कि उनका यह वचन पूरा हो—'जिन्हें तूने मुझे दिया उनमें से मैंने एक भी नहीं खोया।' १० पतरस के पास तलवार थी। वहां महापुरोहित का मल्खुस नामक एक दास था। पतरस ने तलवार निकाली और महापुरोहित के दास पर चलाई। दास का दाहिना कान कट गया। ११ यीशु ने पतरस से कहा, "तलवार म्यान में रखो। क्या मैं दुख का यह प्याला न पिऊं जो मेरे पिता ने मुझे दिया है ?" १२ तब सैन्यदल, अफसर और यहूदियों के सिपाहियों ने यीशु को गिरफ्तार किया और हथकड़ी डाल दी। १३ वे यीशु को हन्ना के पास ले गये। यह काइफा का ससुर था और काइफा उस वर्ष का महापुरोहित था। १४ काइफा ही ने यहूदियों को यह सलाह दी थी कि पूरी जाति के लिये एक मनुष्य का मरना उचित है।

पतरस यीशु का इन्कार करता है

१५ शमौन पतरस तथा एक और शिष्य यीशु के पीछे-पीछे गए। यह दूसरा शिष्य महापुरोहित की जान-पहचान का था। वह यीशु के साथ-साथ महापुरोहित के भवन के आंगन में गया। १६ परन्तु पतरस बाहर ही दरवाजे के पास खड़ा था इसलिये वह दूसरा शिष्य, जो महापुरोहित की जान-पहचान का था, बाहर गया। वह द्वार पर खड़ी सेविका से कह कर पतरस को भीतर ले गया। १७ द्वार पर खड़ी सेविका ने पतरस से कहा, "क्या तुम भी उस मनुष्य के शिष्यों में से नहीं हो?" उसने कहा, "मैं नहीं हूं।" १८ उस समय ठण्ड थी, इसलिए कुछ दासों और सिपाहियों ने आग जलाई और वे आग ताप रहे थे। पतरस भी उनके साथ आग तापने लगा।

महापुरोहित यीशु से पूछताछ करते हैं

१९ महापुरोहित ने यीशु से उनके शिष्यों और शिक्षाओं के विषय पूछा। २० यीशु ने उत्तर दिया, "मैंने जो कुछ कहा सब लोगों के सामने कहा है। मैंने हमेशा सभागृहों में और मंदिर में शिक्षा दी है जहां सब यहूदी एकत्र होते हैं। मैंने गुप्त में कुछ नहीं कहा। २१ आप मुझसे क्यों पूछते हैं? जिन्होंने मेरी शिक्षाओं को सुना है उनसे पूछिये कि मैंने उनसे क्या कहा। वे जानते हैं कि मैंने क्या कहा।" २२ जब यीशु ने यह कहा तब वहां खड़े सिपाहियों में से एक ने यीशु को थप्पड़ मारा और कहा, "तू महापुरोहित जी को इस तरह उत्तर देता है!" २३ यीशु ने उससे कहा, "यदि मैंने कुछ गलत कहा है तो उसे सिद्ध कर। पर यदि मैंने ठीक कहा तो मुझे मारता क्यों है?" २४ तब हन्ना ने यीशु को बन्दी के रूप में काइफा महापुरोहित के पास भेज दिया।

पतरस पुनः यीशु का इन्कार करता है

२५ इधर शमौन पतरस आग ताप रहा था। दूसरों ने उससे पूछा, "क्या तू उसके शिष्यों में से नहीं है?" पतरस ने इन्कार किया और कहा

"मैं नहीं हूं ।" २६ वहां महापुरोहित का एक दास था । यह उस व्यक्ति का रिश्तेदार था जिसका कान पतरस ने तलवार से काट दिया था । उसनें पतरस से कहा, "मैंने तो तुझे बगीचे में उसके साथ देखा था ।" २७ पतरस ने फिर इन्कार किया । ठीक उसी समय एक मुर्गे ने बांग दी ।

यीशु राज्यपाल पिलातुस के समक्ष

२८ जब सबेरा हुआ तो यहूदी यीशु को काइफा के घर से राज्यपाल के भवन को ले गए । पर वे खुद राज्यपाल के भवन में नहीं गए । वे अपने आप को अशुद्ध नहीं करना चाहते थे ताकि वे फसह-त्योहार का भोज खा सकें । २९ इसलिए राज्यपाल पिलातुस भवन से बाहर आए । उन्होंने लोगों से पूछा "तुम लोग इस मनुष्य पर क्या अभियोग लगाते हो ?" ३० यहूदियो ने उत्तर दिया, "यदि उसने दुष्कर्म नहीं किया होता तो हम उसे आपके पास नहीं लाते ।" ३१ पिलातुस ने उनसे कहा, "तुम ही इसे ले जाओ और अपने कानून के अनुसार उसे दण्ड दो ।" यहूदियों ने कहा, "हमें किसी को मृत्युदण्ड देकर प्राण लेने का अधिकार नहीं है ।" ३२ इस तरह यीशु के वे वचन सही उतरे जिनसे उन्होंने संकेत दिया था कि वह कैसी मृत्यु से मरेंगे ।

३३ पिलातुस फिर अपने भवन में गए । उन्होंने यीशु को बुलवाया और उनसे पूछा, "क्या तुम यहूदियों के राजा हो ?" ३४ यीशु ने कहा, "यह आप अपनी तरफ से कह रहे हैं या दूसरों ने आपको मेरे विषय बताया है ?" ३५ पिलातुस ने उत्तर दिया, "क्या मैं यहूदी हूं ? तुम्हारे ही लोगों और महापुरोहितों ने तुम्हें गिरफ्तार करके मेरे पास भेजा है । तुमने क्या किया है ?" ३६ यीशु ने कहा, "मैं इस संसार का राजा नहीं हूं । यदि मैं इस संसार का राजा होता तो मेरे अनुयायी लड़ते और मुझे यहूदियों के हाथ गिरफ्तार नहीं होने देते । मेरा राज्य इस संसार का नहीं है ।" ३७ पिलातुस ने उनसे कहा, "तो तुम राजा हो ?" यीशु ने उत्तर दिया, "आप कहते हैं कि मैं राजा हूं । मैंने इसीलिए जन्म लिया और मैं इसीलिए संसार में आया हूं

कि लोगों को सत्य के विषय बताऊं। जो सत्य-प्रेमी है, वह मेरी बातें सुनता है।" ३८ पिलातुस ने उनसे कहा, "सत्य क्या है?"
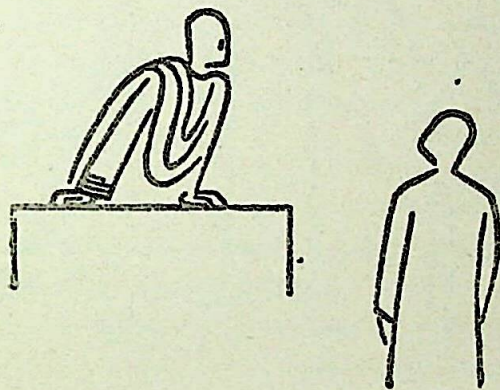
यीशु को मृत्यु दण्ड

तब पिलातुस बाहर खड़े यहूदियों के पास गए और उनसे बोले, "मैं तो इस व्यक्ति में कोई अपराध नहीं पाता कि उसे सजा दी जाए। ३९ तुम्हारी एक प्रथा है। उसके अनुसार फसह-त्योहार पर मैं एक बन्दी को रिहा करता हूं। क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए यहूदियों के राजा को रिहा करूं?" ४० यहूदी फिर चिल्ला उठे, "नहीं, इसे नहीं। बरअब्बा को रिहा करो।" यह बरअब्बा एक डाकू था।

१९ तब पिलातुस ने यीशु को कोड़े लगवाए। २ सैनिकों ने कांटों का एक मुकुट बनाया और यीशु के सिर पर रख दिया और उन्हें एक बैंगनी वस्त्र पहनाया। ३ वे यीशु के पास आकर कहते थे, "यहूदियों के राजा, प्रणाम!" और उन्हें थप्पड़ मारते थे।
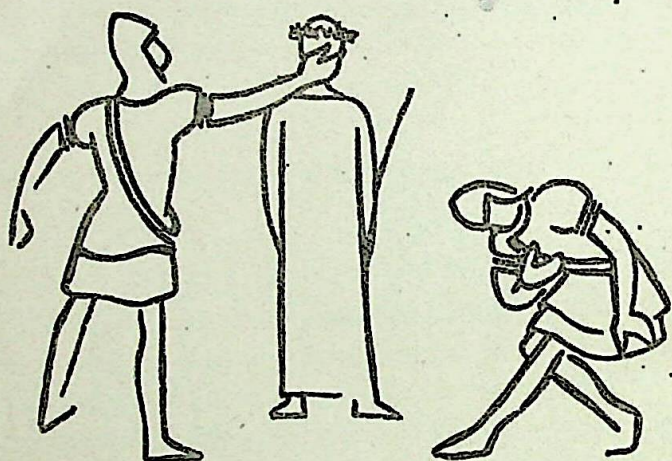
४ पिलातुस फिर भवन के बाहर यहूदियों के पास गए। उन्होंने कहा, "देखो, मैं यीशु को बाहर बुलवा रहा हूं ताकि तुम जान लो कि मैं उसमें कोई अपराध नहीं पाता कि उसे सजा दी जाए।" ५ अतः यीशु कांटों का मुकुट और बैंगनी वस्त्र पहने बाहर आए। पिलातुस ने कहा, "यह है वह मनुष्य।" ६ जब महापुरोहितों और उनके सिपाहियों ने यीशु को देखा तो वे चिल्ला उठे—"इसे सलीब पर चढ़ाओ, सलीब पर चढ़ाओ।" पिलातुस ने उनसे कहा, "तुम ही इसे ले जाकर सलीब पर चढ़ाओ, क्योंकि मैं इसमें कोई अपराध नहीं पाता।" ७ यहूदियों ने कहा, "हमारा एक धर्म-नियम है जिसके अनुसार इसे मृत्युदण्ड मिलना चाहिए। यह परमेश्वर का पुत्र होने का दावा करता है।"

८ जब पिलातुस ने उनका यह कथन सुना तो वह और भी घबरा गए। ९ वह पुनः राज भवन में गए। उन्होंने यीशु से पूछा, "तुम कहां के रहने वाले हो?" पर यीशु ने कोई उत्तर नहीं दिया। १० पिलातुस ने उनसे

कहा, "तुम चुप क्यों हो ? क्या तुम्हें नहीं मालम कि मुझे तुम्हें रिहा करने का भी अधिकार है और तुम्हें सलीब की सजा देने का भी ?" ११ तब यीशु ने उत्तर दिया "यदि आप को ऊपर से अधिकार न दिया जाता तो आपको मुझ पर कुछ भी अधिकार नहीं होता। इस कारण उसका पाप अधिक है जिसने मुझे आप के हाथ सौंपा है।" १२ इस पर पिलातुस यीशु को रिहा करने का प्रयत्न करने लगे। पर यहूदियों ने चिल्ला कर कहा, "यदि आप इसे रिहा करते हैं तो आप रोमन सम्राट के मित्र नहीं। जो व्यक्ति राजा होने का दावा करता है वह रोमन सम्राट का विरोधी है।"

१३ ये बातें सुनकर पिलातुस ने यीशु को बाहर बुलवाया और वह न्याय आसन पर बैठे। वह स्थान 'चबूतरा'[१] कहलाता है या इब्रानी भाषा में गब्बाथा। १४ वह दिन फसह-त्योहार के पहले वाला दिन था; उस दिन त्योहार की तैयारी की जाती है। दोपहर का समय था। पिलातुस ने यहूदियों से कहा, "यह देखो तुम्हारा राजा!" १५ यहूदी चिल्लाने लगे "इसे मृत्युदण्ड दो! मृत्युदण्ड दो! इसे सलीब पर चढ़ाओ!" पिलातुस ने उनसे कहा, "तुम्हारे राजा को मैं सलीब पर चढ़ाऊं ?" महापुरोहितों ने कहा, "रोमन सम्राट को छोड़कर हमारा कोई राजा नहीं।" १६ तब पिलातुस ने यीशु को उनके हाथ सौंप दिया कि वह सलीब पर चढ़ाए जाएं।

यीशु का सलीब पर चढ़ाया जाना

१७ वे यीशु को 'कपाल' नामक जगह ले गए जो इब्रानी भाषा में 'गलगथा' कहलाता है। यीशु अपनी सलीब उठाए हुए उसे वहां तक ले गए। १८ वहां उन्होंने यीशु को सलीब पर चढ़ाया। उन्होंने उनके साथ दो और आदमियों को सलीब पर चढ़ाया, एक को दाएं और दूसरे को बाएं-

---

[१]मूल में लिथोस्ट्रोटुस.
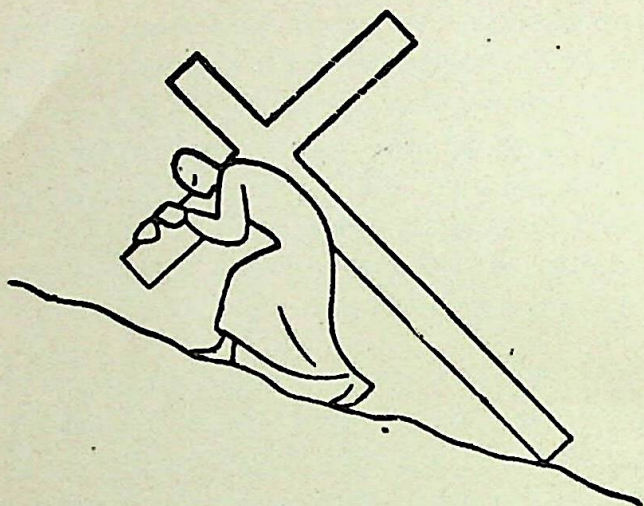
यीशु बीच में थे। १९ पिलातुस ने सलीब पर एक सूचना लगवा दी जिस पर यह लिखा था—"नासरत का यीशु, यहूदियों का राजा।" २० उस सूचना को अनेक यहूदियों ने पढ़ा क्योंकि जहां यीशु को सलीब पर चढ़ाया गया था वह स्थान शहर के निकट था और वह सूचना इब्रानी, लातीनी और यूनानी भाषाओं में लिखी थी। २१ यहूदियों के महापुरोहितों ने पिलातुस से कहा, "'यहूदियों का राजा' मत लिखिए पर यह कि 'इस मनुष्य ने कहा, मैं यहूदियों का राजा हूं।'" २२ पर पिलातुस ने कहा, "जो मैंने लिख दिया, सो लिख दिया।"

२३ जिन सैनिकों ने यीशु को सलीब पर चढ़ाया था उन्होंने उनके कपड़े के चार टुकड़े किए, प्रत्येक के लिए एक टुकड़ा। यीशु का कुरता भी था। वह कुरता सिलाई किया हुआ नहीं पर ऊपर से नीचे तक बुना हुआ था। २४ सैनिकों ने आपस में कहा, "हम इसे न फाड़ें। हम चिट्ठी डालें कि यह कुरता किसका होगा।" सैनिकों ने ऐसा ही किया। इस तरह शास्त्र का यह वचन पूरा हुआ—

'उन्होंने मेरे कपड़े आपस में बांट लिए और मेरे वस्त्र के लिए चिट्ठी डाली।'

२५ यीशु की सलीब के पास उनकी मां, और उनकी मौसी, क्लोपास की पत्नी मरियम और मरियम मगदलीनी खड़ी थीं। २६ यीशु ने अपनी मां को और अपने शिष्य को जिससे वह प्रेम करते थे पास खड़े देखा। उन्होंने अपनी मां से कहा, "मां, यह है तुम्हारा पुत्र।" २७ तब उन्होंने शिष्य से कहा, "यह है तुम्हारी मां,।" उसी समय से वह शिष्य उसे अपने घर ले गया।

यीशु की मृत्यु

२८ इसके बाद यह जानकर कि सब पूरा हुआ, यीशु ने कहा "मैं प्यासा हूं" ताकि शास्त्र का वचन भी पूरा हो। २९ वहां पर एक बर्तन रखा था। उसमें सिरका भरा था। उन्होंने सिरके में स्पंज डुबाया, उसे जूफे की डण्डी पर रखा और यीशु के मुंह से लगाया। ३० यीशु ने सिरका लिया और कहा, "पूरा हुआ" और सिर झुका कर प्राण त्याग दिए।
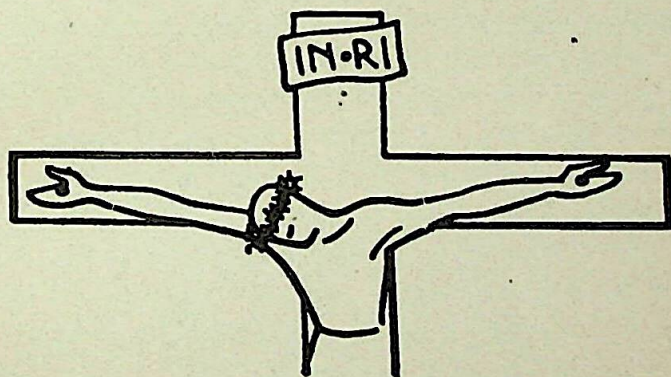
भाले से यीशु की पसली बेधी गई

३१ यह विश्राम-दिवस के पहले वाला दिन था। यह तैयारी का दिन था। इस कारण यहूदियों ने पिलातुस से निवेदन किया कि सलीब पर चढ़ाए

गए व्यक्तियों के पैर की हड्डियां तोड़ दी जाएं और वे उतार लिए जाएं। इस तरह उनके शरीर विश्राम-दिवस में सलीब पर लटके न रहें क्योंकि यह विश्राम-दिवस एक विशेष दिन था। ३२ अतः सैनिकों ने आकर यीशु के साथ चढ़ाए गए दोनों आदमियों के पैर की हड्डियां तोड़ीं। ३३ जब वे यीशु के पास आए तो उन्होंने देखा कि उनकी मृत्यु हो गई है। इस कारण उन्होंने यीशु के पैर की हड्डियां नहीं तोड़ीं। ३४ पर एक सैनिक ने यीशु की पसली पर अपना भाला मारा और तुरन्त खून तथा पानी बह निकला। ३५ जिसने यह सब देखा उसी ने बताया और उसकी गवाही सच्ची है। वह जानता है कि वह सत्य बोल रहा है जिससे तुम भी विश्वास करो। ३६ यह इसलिए हुआ कि शास्त्र का यह वचन पूरा हो, 'उसकी एक भी हड्डी तोड़ी न जाएगी।' ३७ शास्त्र का एक और स्थल कहता है, 'जिसे उन्होंने बेधा है, उसे वे देखेंगे।'

यीशु को दफ़नाया गया

३८ अरिमतिया नगर का यूसुफ, यीशु का शिष्य था पर यहूदियों के डर के कारण उसने यह बात गुप्त रखी थी। उसने पिलातुस से यीशु का शव उतारने की अनुमति मांगी। पिलातुस ने अनुमति दे दी। अतः यूसुफ ने यीशु
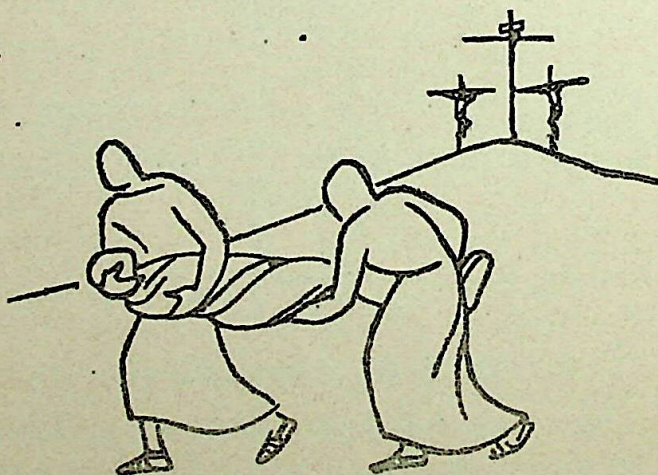
का शव सलीब से उतारा। ३६ निकोदेमुस भी शव पर लगाने के लिये गन्धरस और अगरू के मिश्रण का लेप ले आया। लेप करीब तैंतीस किलो था। वह यही निकोदेमुस है जो पहले यीशु से मिलनें रात में आया था। ४० उन दोनों ने यहूदियो के दफ़नाने की रीति के अनुसार यीशु के शव पर सुगन्धित लेप लगाया और उसे कफ़न में लपेटा। जिस स्थान पर यीशु को सलीब पर चढ़ाया गया था, उसके पास एक बगीचा था। ४१ उस बगीचे में एक नई कबर थी जिसमें कभी कोई दफ़नाया नहीं गया था। ४२ वह यहूदियों के लिए तैयारी का दिन था और वह कबर पास ही थी इसलिए उन्होंने यीशु का शव उसमें रखा।

क़बर खाली मिली

२० विश्राम-दिवस के बाद वाला दिन अर्थात् सप्ताह का पहला दिन! प्रातः काल जब अन्धेरा ही था, मरियम मगदलीनी कबर पर गई। उसने देखा कि कबर के द्वार से पत्थर हटा हुआ है। २ वह दौड़ती हुई शमौन पतरस और उस शिष्य के पास गई जिससे यीशु प्रेम करते थे। उसनें उनसे कहा, "वे प्रभु का कबर से उठा ले गए हैं। हमें नहीं मालूम कि उन्होंने उन्हें कहां रखा है।" ३ तब पतरस और वह दूसरा शिष्य कबर की ओर गए। ४ वे दोनों साथ-साथ दौड़ रहे थे। पर वह दूसरा शिष्य तेज दौड़ गया और पतरस से पहले कबर पर पहुंचा। ५ वह कबर के अन्दर नहीं गया पर उसने झुककर देखा कि कफ़न के कपड़े पड़े हुए हैं। ६ उसके पीछे-पीछे पतरस भी पहुंचा और कबर के भीतर गया। पतरस ने देखा कि कफ़न के कपड़े पड़े हैं। ७ वह अंगोछा जिससे यीशु का सिर बांधा गया था, कफ़न के कपड़ों से अलग एक स्थान पर लिपटा रखा है। ८ तब दूसरा शिष्य भी जो पतरस से पहले कबर पर पहुंचा था, भीतर गया। उसने भी देखा और विश्वास किया। ९ उस समय तक शिष्य शास्त्र की यह बात नहीं समझते थे कि यीशु मर कर अवश्य फिर जीवित होंगे। १० तब शिष्य अपने घर लौट गए।

यीशु मरियम मगदलीनी को दर्शन देते हैं

११ मरियम कबर के बाहर खड़ी रो रही थी। रोते-रोते उसने कबर के अन्दर झांका १२ तो उसने देखा कि उजले वस्त्र पहने दो स्वर्गदूत बैठे हैं।

जहां यीशु का शव रखा था वहां सिर की तरफ एक स्वर्गदूत था और पैर की तरफ दूसरा। १३ स्वर्गदूतों ने मरियम से कहा, "तुम क्यों रो रही हो ?" उसने कहा, "वे मेरे प्रभु को उठा ले गए हैं और मुझे नहीं मालूम कि उन्हें कहां रखा है।" १४ यह कहकर मरियम पीछे मुड़ी। उसने यीशु को खड़ा देखा पर उन्हें पहचाना नहीं। १५ यीशु ने उससे कहा, "हे नारी, तू क्यों रो रही है ? तू किसे ढूंढ़ रही है ?" मरियम ने उन्हें माली समझा और उनसे पूछा, "महाशय, यदि आप यीशु को उठाकर ले गए हैं तो मुझे बताइए कि उन्हें कहां रखा है। मैं उन्हे ले जाऊंगी।" १६ यीशु ने उसका नाम लिया, "मरियम !" मरियम उनकी तरफ मुड़ी और उसने इब्रानी भाषा में कहा, "रब्बूनी" अर्थात् "हे गुरु।" १७ यीशु ने उससे कहा, "मुझे न छू। मैं अभी तक ऊपर पिता के पास नहीं गया हूं। पर तू मेरे भाइयों के पास जा और उनसे कह कि मैं अपने पिता और तुम्हारे पिता, अपने परमेश्वर और तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर जा रहा हूं।" १८ तब मरियम मगदलीनी शिष्यों के पास गयी। उसने उन्हें बताया, "मैंने प्रभु को देखा है !" उसने उन्हें प्रभु का सन्देश भी दिया।

यीशु शिष्यों को दर्शन देते हैं

१९ उसी दिन अर्थात् सप्ताह के पहले दिन, शाम का समय था। यहूदियों के डर से शिष्य दरवाजे बन्द कर घर के भीतर थे। अचानक यीशु उनके बीच
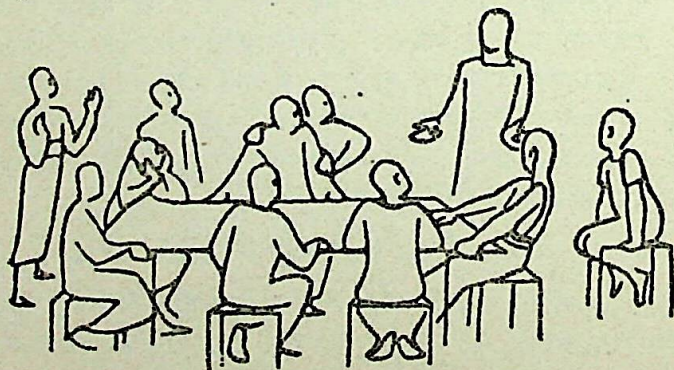
आ खड़े हुए। उन्होंने शिष्यों से कहा, "तुम्हें शान्ति मिले।" २० यीशु ने उन्हें अपनी हथेलियां और अपनी पसली दिखाई। प्रभु को देखकर शिष्य बहुत आनन्दित हुए। २१ यीशु ने उनसे फिर कहा, "तुम्हें शान्ति मिले। जैसे पिता ने मुझे भेजा है वैसे ही मैं तुम्हें भेजता हूं।" २२ जब यीशु ने उन पर अपना श्वास फूंका और कहा, "लो पवित्र आत्मा लो। २३ जिनके पाप तुम क्षमा करो, वे क्षमा किए गए और जिनके पाप तुम क्षमा न करो वे क्षमा नहीं किए गए।"

यीशु और थोमा

२४ थोमा जिसे जुड़वा भी कहते हैं बारह प्रमुख शिष्यों में से एक था। जब यीशु ने अन्य शिष्यों को दर्शन दिया था तब थोमा उनके साथ नहीं था। २५ इस कारण उन्होंने उसे बताया "हमने प्रभु को देखा है।" पर थोमा ने उनसे कहा, "जब तक मैं उनकी हथेलियों में कीलों के निशान न देख लूं और कीलों के घावों पर अपनी अंगुली तथा उनकी पसली पर अपना हाथ रखकर न देख लूं, मैं विश्वास नहीं करूंगा।"

२६ आठ दिन बाद शिष्य फिर घर के भीतर थे। दरवाजे बन्द थे और थोमा भी उसके साथ था। अचानक यीशु उनके बीच आ खड़े हुए। उन्होंने कहा, "तुम्हे शान्ति मिले।" २७ तब उन्होंने थोमा कहा, "अपनी अंगुली यहां रख और मेरी हथेलियों को देख ! अपना हाथ मेरी पसली पर रखकर देख और अपनी शंका दूर कर तथा विश्वास कर।" २८ थोमा ने कहा, "मेरे प्रभु ! मेरे परमेश्वर !" २९ यीशु ने उससे कहा, "तू ने मुझे देखा है इसलिये तू विश्वास करता है। धन्य हैं वे जिन्होंने मुझे नहीं देखा फिर भी विश्वास किया।"

शुभ सन्देश लिखने का उद्देश्य

३० यीशु ने अपने शिष्यों के सामने और भी बहुत से अद्‌भुत चिन्ह दिखाए थे जिनका वर्णन इस पुस्तक में नहीं हैं। ३१ पर जिन अद्‌भुत चिन्हों का वर्णन इस पुस्तक में है वह इसलिए कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही मसीह है, परमेश्वर-पुत्र हैं। इस तरह विश्वास करके तुम उनके नाम से अनन्त जीवन प्राप्त करो।

यीशु सात शिष्यों को दर्शन देते हैं

२१ यीशु ने एक बार फिर अपने शिष्यों को दर्शन दिया। उन्होंने तिबेरियास झील के किनारे इस प्रकार दर्शन दिया—२ शमौन पतरस, थोमा जिसे "जुड़वा" कहते हैं, गलील प्रान्त के काना नगर का नथानिएल, जबदी के पुत्र तथा दो अन्य शिष्य एकत्र थे। ३ शमौन पतरस ने अन्य शिष्यों से कहा, "मैं मछली पकड़ने जाता हूं।" उन्होंने कहा, "हम भी तुम्हारे साथ चलेंगे।" वे निकल पड़े। वे एक नाव पर चढ़े। उस रात उन्होंने कुछ नहीं पकड़ा। ४ सुबह होते-होते
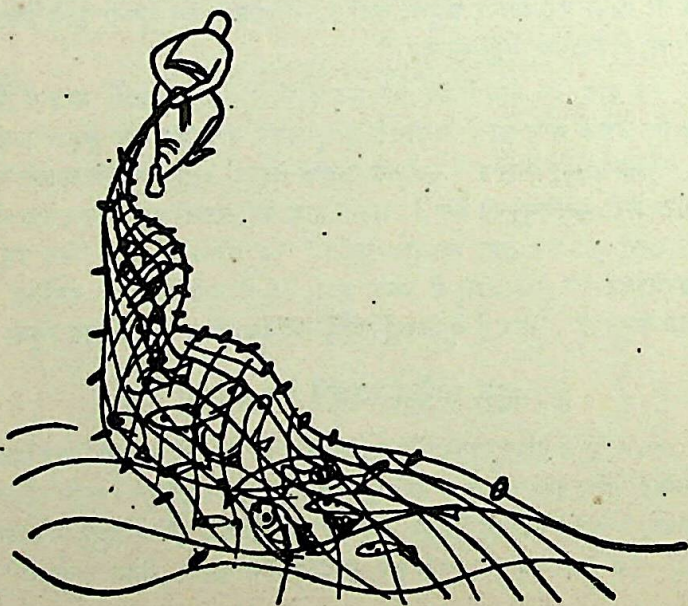
यीशु झील के किनारे खड़े हुए। पर शिष्यों ने नही पहचाना कि वह यीशु हैं। ५ शिष्यों ने उनसे कहा "जवानों क्या तुमने कुछ मछलियां पकड़ीं?" उन्होंने उत्तर दिया, "नहीं।" ६ यीशु ने उनसे कहा, "नाव की दाहिनी ओर जाल डालो, और तुम पकड़ोगे।" अतः उन्होंने जाल डाला। इतनी मछलियां आयीं कि वे जाल न खींच सके। ७ इस पर, जिस शिष्य से यीशु प्रेम करते थे, उसने पतरस से कहा, "यह तो प्रभु हैं!" शमौन पतरस ने जब सुना कि वह प्रभु हैं तो उसने अपना कुरता लपेट लिया क्योंकि उसने कपड़े उतार दिए थे। वह पानी में कूद-पड़ा। ८ अन्य शिष्य मछलियों का जाल खींचते हुए नाव से किनारे आए। वे किनारे से ज्यादा दूर नहीं पर लगभग सौ मीटर पर थे। ९ वे नाव से उतरकर जमीन पर आए। उन्होंने कोयले की आग पर रोटी और मछली देखी। १० यीशु ने उनसे कहा, "जो मछलियां तुमने अभी पकड़ी हैं उनमें से कुछ लाओ।" ११ शमौन पतरस नाव पर चढ़ा। वह मछलियों से भरे जाल को जमीन पर खींच लाया। उसमें एक सौ तिरपन बड़ी-बड़ी मछलियां थीं। इतनी मछलियां होते हुए भी जाल न फटा। १२ यीशु ने उनसे कहा, "आओ भोजन कर लो।" किसी शिष्य को साहस नहीं हुआ कि उनसे पूछे 'आप कौन हैं ? १३ यीशु ने जाकर रोटी उठाई और उन्हें दी, उसी प्रकार मछली भी।

१४ मृतकों में से फिर जीवित होने के बाद यीशु ने यह तीसरी बार अपने शिष्यों को दर्शन दिया।

यीशु और पतरस

१५ जब उन्होंने भोजन समाप्त कर लिया तब यीशु ने शमौन पतरस से कहा, "यूहन्ना के पुत्र शमौन, क्या तू मुझे इनसे अधिक प्रेम करता है?" उसने यीशु से कहा, "हां प्रभु आप जानते हैं कि मैं आपसे प्रेम करता हूं।" यीशु ने उससे कहा, "मेरे मेमनों की देखभाल कर।" १६ यीशु ने उससे दूसरी बार फिर कहा, "यूहन्ना के पुत्र शमौन, क्या तू मुझसे प्रेम करता है ?" उसने उत्तर दिया, "हां प्रभु, आप जानते हैं कि मैं आपसे प्रेम करता हूं।" यीशु ने उससे

कहा, "मेरी भेड़ों की रखवाली कर।" १७ यीशु ने तीसरी बार उससे पूछा, "क्या तू मुझसे प्रेम करता है ?" पतरस को दुःख हुआ कि यीशु ने तीसरी बार उससे पूछा: 'क्या तू मुझसे प्रेम करता है ?' उसने यीशु से कहा, "प्रभु आप सब कुछ जानते हैं। आप जानते हैं कि मैं आपसे प्रेम करता हूं।" यीशु ने उससे कहा, "मेरी भेड़ों की देखभाल कर। १८ मैं तुझसे सच कहता हूं—जब तू जवान था तो अपनी कमर कसकर तू जहां चाहता था वहां जाता था। पर जब तू बूढ़ा होगा तो तू अपने हाथ फैलाएगा और कोई दूसरा व्यक्ति तुझे बांधेगा। वह तुझे वहां ले जाएगा जहां तू जाना न चाहेगा।" १९ ऐसा कहकर यीशु ने संकेत दिया कि पतरस कैसी मृत्यु के द्वारा परमेश्वर की महिमा करेगा। यह कह कर उन्होंने पतरस से कहा, "मेरे पीछे आ।"

यीशु और उनका प्रिय शिष्य

२० पतरस ने पीछे मुड़कर देखा कि जिस शिष्य से यीशु प्रेम करते थे वह भी पीछे-पीछे आ रहा है। यह वही था जिसने भोजन के समय यीशु की छाती की ओर झुककर यह पूछा था, 'प्रभु वह कौन है जो आपको गिरफ्तार करवाएगा?' २१ पतरस ने उसे देखकर यीशु से कहा, "प्रभु इसका क्या होगा ?" २२ यीशु ने उससे कहा, "यदि मैं चाहूं कि वह मेरे आने तक जीवित रहे, तो इससे तुझे क्या मतलब ? तू मेरा अनुसरण कर।"

२३ विश्वासियों में यह चर्चा फैल गई कि वह शिष्य नहीं मरेगा। यीशु ने यह नहीं कहा था कि वह शिष्य नहीं मरेगा। पर यह कहा था : यदि मैं चाहूं कि वह मेरे आने तक जीवित रहे तो उससे तुझे क्या मतलब ?

२४ यही वह शिष्य है जिसने इन बातों की गवाही दी है और इन्हें लिखा है। हम जानते हैं कि उसकी गवाही सच्ची है। २५ यीशु ने और भी अनेक कार्य किए। यदि उन्हें एक के बाद एक लिखा जाए, तो मैं समझता हूं कि लिखी गई पुस्तकें संसार भर में नहीं समाएंगी।

—:०:—

Available at :

1. Bible House, Old Hazaribagh Road, Ranchi 834 001.
2. Bible House, 14 Thornhill Road, Allahabad.
3. Bible House, 10 Parliament Street, New Delhi - 110 001.

सैदा
सारफत
भूमध्यसागर
लबानोन
फीनीके
सूर
हेर्मोन पर्वत
दमिश्क
कैसरिया फिलिप्पी
गलील
खुराजीन
बैतसैदा
कफरनहूम
गलील सागर
मगदन
गिर्गेसा
काना
तिबिरियास
नासरत
नाईन
पतुलिमियास
कर्मेल पर्वत
दिकापुलिस
कैसरिया
सामरिया
सामरिया
सूखार
शकेम
याफा
अरिमतियाह
लुद्दा
इफ्राईम
बैतेल
बैतनिय्याह
इम्माऊस
यरीहो
यरूशलेम
बैतनिय्याह
पिरिया
बैतलहम
यहूदिया
हेब्रोन
अज्जाह
लवण सागर
इदूमिया
उत्तर
नये नियम के समय का पलस्तीन
मीलों का मापदंड
५ १० २० ४० ६०